16716

* श्रीः *

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

प्रेमपीयूषधारा ।

मोहिनीदास-प्रणीत ।

मैनेजर पं० आत्माराम शर्मा द्वारा—

जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव, काशी में मुद्रित ।

डा. भगवती प्रसाद सिंह एम. ए. डी. लिट्.
निजी पुस्तकालय

चतुर्थ संस्करण] सन् १९२४ ई० [दाम प्रेम

॥ श्रीः ॥

श्री जानकीवल्लभो विजयते ।

प्रेमपीयूषधारा ।

अर्थात्

श्रीमिथिलेशकिशोरी और श्रीअवधकिशोरजू
के प्रणयमय विलासामृत का
पवित्र प्रवाह ।

——:O:——

" जेहि लहि पुनि कछु लहन की,
आस न जिय में होय ।
जयति जगत पावन करन,
प्रेमबरन यह दोय ॥"

(हरिश्चन्द्र)

तदीयस्नेहसुधापरायण
मोहनीदास–प्रणीत ।

(*All rights, reserved.*)

मैनेजर पं० आत्माराम शर्मा द्वारा—
जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव, काशी में मुद्रित ।

तृतीय संस्करण]   सन् १९२४   [दाम प्रेम

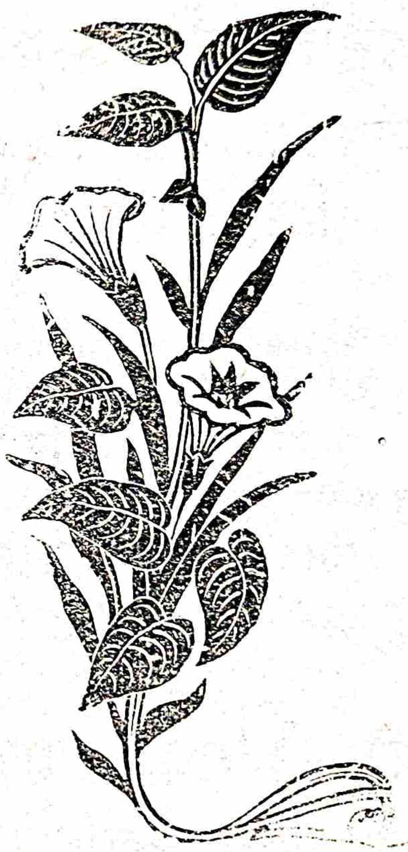

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
16716

विषयानुक्रमणिका।

विषय	पृष्ठ से	तक
बिनय के पद	१	१०
मिथिलावलोकन	१०	१८
फुलवारी के पद	१९	२३
धनुषयज्ञ के पद	२३	२४
विवाह समय के बनरा के पद	२४	३९
बिदाई	३१	४५
विरह-निवेदन	४५	५७
सखी-प्रति सखीबचन....	५७	७०
अभिलाष	७०	७३
होली के पद	७४	९३
चैती घाटो	९३	१०३

विषय	पृष्ठ से	तक
कजरी	१०३	.... ११२
झूलन के पद	११२	.... १३३
सैन के पद....	१३३	.... १४०
प्रभात-छबि	१४०	.... १४०
उपवन-विहार	१४०	.... १४४
रास के पद	१४४	.... १४४
गुलाब-बंगला के पद....	१४४	.... १४५
स्फुट पद	१४५	.... १४७
बिनय के पद	१४८	.... १४८

श्रीः ।

समर्पण ।

हृदयेश !

मैं इस समय तुम्हें शवरी के बेर, सुदामा के तण्डुल, बिदुर की भाजी और श्रुतदेव के उपायन की सुधि दिलाकर इसे अङ्गीकार करने का अनुरोध नहीं करता, और न उस भाँति इसे अपनाने के लिये हठ करता हूं, जिस भाँति तुमने गणिका, गज, गीध, अजामिल, व्याध, निषाद, कपि, निशाचर आदिकों को अङ्गीकार किया ! तो मैं क्या चाहता हूँ, या किस भाँति इस तुम्हारे ही कुतूहल को तुम्हें समर्पित किया चाहता हूं, इसे क्या तुम सुना चाहते हो ? अच्छा, ऐसी ही इच्छा है तो वह भी सुनलो,-

क्या तुम जनकपुर-वासियों के हौंसले भूल गए, या तुम्हें अब दण्डकारण्य-वासी मुनियों

के हृदयोच्छ्वास स्मरण न रहे ! तब यदि मैं भी कुछ वैसेही हौंसले करूं या वैसेही कुछ लेने देने की इच्छा करूँ, तो क्या इतनी धृष्टता तुम्हें सह्य न होगी?

अच्छा, हो वा न हो, पर इसमें तो तुम कोई आपत्ति कर ही नहीं सकते कि—'त्वया हृषीकेश ! हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मितथा करोमि-' यह जो कुछ है, तुम्हारा ही है; अथवा यों कहें कि परस्पर हृदय के विनिमय होने से यह तुम्हारे ही हृदय का उद्गार है। अतएव, देव ! यह तुम्हारा कुतूहल, यह तुम्हारे हृदय का उच्छ्वास और यह तुम्हारा ही मनोविनोद तुम्हीं को समर्पित है मुझे विश्वास है कि अब तुम्हें इसके अङ्गीकार करने में कोई आपत्ति न रही होगी।

केवल तुमारा ही,

अभिन्नहृदय।

॥ श्रीः ॥

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ॥

प्रेमपीयूषधारा ।

विनय के पद ॥

(भजन)

गहु मन चरन सीताराम ॥ जो चरन हरहृदय-मानस बसत आठौं जाम । जेहि परसि बनिता मुनी की गई है निज धाम ॥ जा चरन तें निकसि सुरसरि भई शिव की वाम । दास मोहनि चहत सो पद करहु पूरन काम ॥ १ ॥

रघुबर मो बिनती सुनि लीजे । हौं तो पतितन को महराजा ताको ध्यान न कीजे ॥ यह संसार मोह को बन्धन यासों मुक्ति करीजे । मोहनिदास दोऊ कर जोरे भक्ति बिमल बर दीजे ॥ २ ॥

तुम बिन को राखै मोहि राम ॥ तुमरो नाम जपौं निसिबासर त्यागि सकल गृह-काम। तुमरे चरनन की सेवा तजि भावै नहिं धन धाम ॥ ध्यान तुम्हारो धरौं हिये में पलछिन आठौं जाम। मोहनिदास कहै कर जोरे दरसन देहु ललाम ॥ ३ ॥

रघुबर तेरो नाम अनन्त। गावत सेस महेस सारदा पावत तदपि न अन्त ॥ बरनत सनकादिक मुनि नारद नित नित निगम कहन्त। मोहनिदास मगन ह्वै निसदिन तेरो ध्यान धरन्त ॥ ४ ॥

भजन बिन जीनो है बेकाम। काम क्रोध में भूलि रह्यो मन त्यागि दियो हरिनाम ॥ स्वान समान फिरत क्यों मूरख इत उत धामन धाम। मोहनिदास बिनय करि भाखै लेहु सरन श्रीराम ॥ ५ ॥

रे मन नाहक तू भटकै। यह संसार मीत स्वारथ को यामें क्यों लटकै॥ काम क्रोध मद लोभ मोह को हाथ नहीं झटकै। मोहनिदास सिया रघुबर सों काहे नहिं अँटकै॥ ६॥

जौ मन होतो रघुबर चेरो। तौ हिय में प्रभु-चरन छाड़िकै काम न करत बसेरो॥ स्वान समान फ़िरत नहिं इत उत माया तें चहुं घेरो। दुर दुर होत हाय नहिं तेरो निस दिन सांझ सबेरो॥ मोहनिदास मान अबहूं तें इहै सिखावन मेरो। त्यागि सकल संसार राम भजु जो भवसागर बेरो॥ ७॥

॥ भैरवी ॥

हमारे प्रभु नेक लखौ मम ओर। आरत बचन पुकारौं रघुबर लखहु कृपा की कोर॥ स्वारथ मीत त्यागि सब जग के

सरन गह्यो अब तोर । मोहनिदास छोरि सब पकस्यो राम नाम भर जोर ॥ ८ ॥

माई मोहि लगत सकल जग फीको । जो कछु अहै जगत के महियां सो सब स्वारथ ही को ॥ ऐसो हाल देखि के जग को धीरज होत न जी को । मोहनिदास मोह काटन को राम नाम एक नीको ॥ ९ ॥

प्रभु मोहि कब लैहो अपनाई ॥ लियो उबारि गजहिं आरत सुनि पांव पियादे धाई । करी पुकार द्रौपदी जबहीं दीन्हीं चीर बढ़ाई ॥ जब जब बिपति परी भक्तन पर तब तब लीन्ह बचाई । मोहनिदास सरन तुव आयो देहु अचल सेवकाई ॥ १० ॥

॥ भैरवी ॥

रे मन क्यों नहिं राम भजै । बिषै बासना के मारग को काहे नाहिं तजै ॥

चित चाहै जो भजन करन को तो कोइ नहिं बरजै। मोहनिदास न जीतै प्रभु बिन यह संसार अजै ॥ ११ ॥

हे प्रभु अब तो लेहु अपनाई। मैं सेवक तुम स्वामि-सिरोमनि तजहु तो कहा बसाई ॥ मोहि न चहै संपदा जगत की नहिं चह नाम बड़ाई। सुगतिहुं नाहिं कृपानिधि चाहौं सुमतिहुं नाहिं सोहाई ॥ मोहनिदास यही बर मांगत सुनहु बिनय चितलाई। तव पद-कमल मोर मन-मधुकर निसदिन रहत लोभाई ॥ १२ ॥

रघुबर जो नहिं होत सुनाई। तौ यह दीनदयाल नाम की ह्वैहै नाम धराई ॥ तुम स्वामी मैं सेवक प्रभु जू यह संबंध सोहाई। याको नाथ भूलि जो जैहो तो मम कहा बसाई ॥ लाज करो निज पन

की नेकहुँ बेदन जो है गाई। मोहनिदास दीन भाखै लेहु ताहि अपनाई ॥ १३ ॥

॥ भजन ॥

राम-सिया भजु राम-सिया रे। होत तरन-तारन नर तेहि छिन जो भूलेहु प्रभु नाम लिया रे॥ जेहि पर रीझयो बस मैं होइगो जेहि पर खीझ्यो सुगति दिया रे। मोहनिदास भजै नहिं मूरख तौ तू स्वान-समान जिया रे ॥१४ ॥

मैं तो भजूं सीताराम राम राम राम हो। छोड़ि सब लाज नहिं काज दुनियां से कछू चाहिए न मोको यह झूठो धन धाम हो ॥ भाई बंधु मात पिता द्वै दिन के संगी सब अंत में न कोई निज आवै कछू काम हो। मोहनि कहत मम बात यह मान लेहु मोहि तो भरोसो एक सीताराम नाम हो ॥ १५ ॥

॥ खम्माच ॥

मेरे मन श्रीरघुबीर बिराजै । जा मुख की सुन्दर छबि निरखत कोटिक चन्दहि लाजै ॥ एक बार जो ध्यान धरत है जन्म सहस अघ भाजै ॥ मोहनिदास को भाग बड़ो है जाके हिय प्रभु राजै ॥ १६ ॥

मों मन बसत राम धनुधारी ॥ क्रीट मुकुट माथे पर सोहत कुंडल की दुति न्यारी । नाक बुलाक बिराजत सजनी छबि बिलोकि बलिहारी ॥ बाम भाग सीता महरानी निरखत तन मन वारी । मोहनिदास मगन ह्वै बेगहि आयो सरन मझारी ॥ १७ ॥

॥ भैरवी ॥

अब मैं लै कर बीन बजैहों । झूठो मोह त्यागि के जग को प्रभु को गुन गन गैहों ॥ लखि मोहनि मूरति रघुबर की अँखियन

को सुख देहों । मोहनिदास अवधछैला के चरनन में चित लैहौं ॥ १८ ॥

नित उठि दरसन कीजिये । दशरथ सुत अरु जनकलली को रूप सुधारस पीजिये ॥ मोहनि मूरति निरखि जुगल छबि नैनन को सुख दीजिये । मोहनिदास लागि चरनन में जन्म सुफल करि लीजिये ॥ १९ ॥

॥ खम्माच ॥

मेरो मन चित्रकूट अनुरागै । जहँ मन्दाकिनि नदी बहति है मंजन तें अघ भागै ॥ रामसिया अरु लखनलाल को निरखि रूप हिय पागै । मोहनिदास यही बर मांगत चरन कमल चित लागै ॥ २० ॥

चलु मन चित्रकूट की ओर । जहँ बिहार निस दिनवाँ सिय संग करते अवध-

किशोर ॥ ऐसो भल औसर जनि चूकै, नेह राम सों जोर । मोहनिदास मान मेरी सिख, है सब बिधि हित तोर ॥ २१ ॥

जैजैवन्ती ।

सखि मैं चित्रकूट को जैहौं । लै कर बीन बजाइ लाल-ढिग, मधुरी तान सुनैहौं ॥ भाव बताइ रिझाइ छैल को, अपने बस करि लैहौं । मोहनिदास लागि पिय अंगनि, हिय की कसक मिटैहौं ॥ २२ ॥

चंचरीक ।

मेरो चित चाहत है, चित्रकूट जाइबो ॥
द्वार द्वार टूक टूक, मांगि मांगि खाइबो ।
मंदाकिनि सरित मांहि, प्रेम तें नहाइबो ॥
भक्तन को पदरज लै, सीस पै चढ़ाइबो ।

कामदगिरि कर हुलसि, पैक्रमा लगाइ-
बो ॥ प्रीतम-जुग-चरन-कमल, मांहि
चित्त लाइबो । रसना तें मोहनि नित,
रामनाम गाइबो ॥ २३ ॥

(मिथिलावलोकन)

रेखता ।

इत ओर लखो आवता अवधेश लाल है।
गलियों के बीच झूमता मस्ताना चाल है॥
नैना दोऊ नुकीले मुख मंद-हास है।
अधरन पै पान-लाली सुन्दर य गाल है॥
अलकें अतर भरी हुईं इत उत बिखर रहीं।
मानो हिया फंसाइबे को काम-जाल है॥
देखो अली री जालिम छैला है यह वही।
जिसको निहार मोहनी रहता निहाल है॥२४॥
मन ले लिया रंगीले सुन्दर सुजान ने।

16716

बेखुद किया सभों को भृकुटी कमान ने ॥
वह साँवली सी सूरत हिय में समा गई।
या बावरी किया है मृदु मुसकुरान ने ॥
मिथलापुरी में कहर मची आलियों के बीच।
घायल किया जिन्हों को जुल्फे कृपान ने ॥
कहते बने सरूप औ न देखते बनै।
बस मोहनी को कर लिया नैनों की सान ने॥२८॥
देखो छली छबीला दशरथ-कुमार है।
ऊधम मचाया जनकपुर में बेसुमार है॥
नैना दोऊ चुटीले अरी तेज धार है।
ललना को कतल करने को हरदम तयार है॥
मनमोहनी की जादू हँसि करनहार है।
छैला अजब अनोखा सखी सानदार ह॥
लखि के छबी सुमोहनी तन ना सम्हार है।
मन बार बार बार हठी वार वार है॥ २६॥
चलु देखु री छबीली खड़ो अवध लाल है।

अलियन पै बिहँसि फेंक रह्यो छबि को जाल है॥
अलकैं बिखरि के चूमतीं प्यारे को गाल है।
गल बीच राजतीं अहो फूलों की माल है॥
फिरती उसी की चाह में मिथिला की बाल है।
जो एक बार हू लख्यो ह्वैगो बिहाल है॥
मुसक्यान छैल की हिये बिच करति साल है।
ऐसी अनोखी मोहनी प्यारे की चाल है॥२७।
अँखियाँ अनोखी लाल की हिय बीच धँस गई।
सूरत छबीले छैल की जिय बीच बस गई॥
लखिके अनोखे रूप के जालों को हाय हाय।
ललना जनकपुरी की सबै जाय फँस गई॥
अलकैं कुटिल बदन पै झुकि झूमि लोटतीं।
मनमोहनी अली के नागिन सी डंस गई॥२८॥

बहार, झपताला।

देखु सखी मोहनी मूरि मोकों छली॥
देखि मम ओर करि हँसन जादू लला,

बावरी हाय करि दीन मोकों अली । जुलुफ जालन फँसी प्रेम हिय में धँसी, घूमती बाल बेहाल गलियन गली ॥ गई मुरझाय अवधेश छलिया बिना, देखि सकुचाय जिमि चन्द पंकज-कली । मोहनी हाय मन-मृगन को बेदरद, मारि दृग-तीर करी अजब अहेर भली ॥ २६ ॥

बिलावल ।

प्यारो हमारो साँवलिया । अलकैं छहरत आइ बदन पै, गूही फूलन कलिया ॥ तकि नारिन टोना पढ़ि फेंकै, मंद हँसन की जलिया । मोहनिदास अनोखो चोखो, बिहरत मिथिला-गलिया ॥ ३० ॥

ठुमरी, खम्माच ।

जनक-सहर बिच कहर मचावत,

घूमत आवत अवध-दुलारा। मृदु मुसकावत पट फहरावत, हँसि बतरावत अति सुकुमारा॥ नैन नचावत सैन चलावत, चित्त चोरावत राजकुमारा। हिय हुलसावत नेह बढ़ावत, मोहनि अलि को है वह प्यारा॥ ३१॥

ठुमरी, चाल दूसरी।

हमारो मन बस कीन्हों हो लाल। नैनन में कछु टोना राखत, निरखत भई हौं बिहाल॥ अनब्याही ब्याही सब घायल, मिथिलापुर की बाल। मोहनि-दास कहौ सांची पिय, कहँ सीखी यह चाल॥ ३२॥

झंझौटी।

ललन तुम हँसि लीन्हो मन मोर। घायल कीन्हों मोहिं सँवलिया, मारि

दृगन की कोर ॥ दरद उठै रहि रहि उर मेरे, सुनिए अवध किसोर । मोहनिदास रसिक छैला तुम, साँचे चित के चोर ॥ ३३ ॥

खेमटा।

तेरे नैन प्यारे जुलुम करत हैं। सुनु दसरथ के लाल मनोहर, निरखत सब को हियरा हरत हैं ॥ मैं अब तो रंग गई श्याम रंग, और रंग नहिं समुझि परत हैं । मोहनिदास जनकपुर-बासिन, लखे रूप जिय धीर ना धरत हैं ॥ ३४ ॥

दादरा।

तेरी भौहैं कमनियां अवध छैला। करत कहर अलियन उर माहीं, लोटे मनहुँ नगिनिया, अवधछैला ॥ ऐसो जुलुम सिकारी सँवलिया, मारत सैन निसनियाँ,

अवधछैला । मोहनिदास बिसरि गई सुधि बुधि, लखि मधुरी मुसुकनियाँ, अवधछैला ॥ ३५ ॥

पूर्बी ।

ऐसे अनोखे तुम्हीं हौ छैला, मारत सैन की सान रे (प्यारे)। मृदु मुसुकाय बावरी कीन्हीं, खैंचि भौंह-दृगबान रे (प्यारे)॥ मिथिलापुर की जेती ललना, त्यागि दई कुलकान रे (प्यारे)। मोहनिदास लखे हैं जब तें, तलफत हैं नित प्रान रे (प्यारे)॥ ३६ ॥

खेमटा ।

मारी रे मोहि सन सँवलिया। हँसि के छैल लहर उर डारी, कहर मचत दिन रैन सँवलिया ॥ ऐसो जालिम अवध-लला री, हरत हिये कर चैन सँवलिया।

मोहनिदास दरद के मारे, मुख नहिं आवत बैन सँवलिया ॥ ३७ ॥

बाँके नैन तोरे सोहैं सँवलिया । मिथिलापुर की सब नारिन को, निरखत हियरा मोहै सँवलिया ॥ नैन चोट सों घायल ह्वै के, जौन बचै अस को है सँवलिया । मोहनिदास मगन ह्वै तेरो, रैन दिना मुख जोहै सँवलिया ॥ ३८ ॥

कहर परी देखो जनक नगरिया । जब तें लखी साँवली सूरत, नेक रही नहिं मोहि खबरिया ॥ मिथिला की सब नवल छबीली, बावरि डोलत हाय डगरिया । मोहनिदास बिहाल बाल सब, करि दीन्हीं सखि मारि नजरिया ॥ ३९ ॥

दूसरी चाल ।

चलो देखैं अवध को लाल, बिहँसि मन

लेइ रहे॥ अलकैं बिखरि रहीं मुख ऊपर, अजब अनोखी चाल, बिहँसि मन लेइ रहे॥ अँखियां दोउ रतनार सखी री, बिधु सम सोहत भाल, बिहँसि मन लेइ रहे॥ मोहनिदास करै बस अपने, डारि प्रेम को जाल, बिहँसि मन लेइ रहे॥ ४० ॥

तीसरी चाल।

मुनि सँग बालक काके सखी री। सुन्दर रूप मनोहर नैना, चितवन में रस जाके सखी री॥ अलकैं छूटि बदन पर सोहैं, भौं कमान अति बाँके सखी री। मोहनिदास बिहँसि एक बोली, ए कुमार कौसिला के सखी री॥ ४१ ॥

(फुलवारी के पद)

खेमटा।

कहँ आई है मन तूं गवाँइ, सखी मोहि साँची कहौ। तोड़त फूल कुमार लाल द्वै, इहि बगिया बिच आइ॥ अति अनुपम सुखमा सो आनन, लखि हिय काम लजाइ। मोहनिदास कियो वहि घायल, मो तन मृदु मुसुक्याइ॥ ४२॥

दूसरी चाल।

सखि अवधेस छयल मन हरिया। चारु कपोल मंद मुसकनियाँ, दोउ नैना बाँके रतनरिया॥ आय छयल मिथिला नगरी को, घायल कीन्हों मारि नजरिया। मोहनिदास विलोकन चलु री, घूमत हैं इत उत फुलवरिया॥ ४३॥

ठुमरी, धुन खम्माच।

आजु सखी द्वै लाल मनोहर, घूमि रहे इत उत फुलवरिया। मो तन लखि मृदु हँसि कै छैला, बावरि कीन्हीं मारि नजरिया॥ ऐसी दसा भई ता छिन तें अलि, नेक रही नहिं हाय खबरिया। मोहनिदास बिलोकन चलु री, तोरत फूल गहे तरु-डरिया॥ ४४॥

दादरा।

मो मन बसि गयो अवध-बिहारी॥ जनक-बाग में गई रही मैं, बीनत कुसुम फिरत फुलवारी। वा छबि को कहँ लगि हौं बरनौं, निरखत तन मन धन सब वारी॥ ता छिन तें बावरि भइ डोलौं, जा छिन तें वह रूप निहारी। मोहनिदास प्रेम की गाँसी, मो हिय आनि लगी अति भारी॥ ४५॥

आए जनक-बगियाँ द्वै छलिया। स्यामल गौर सलोने कुँवर दोउ, हौं निरखन गइ सुनु मेरि अलियाँ॥ वाही ने बावरी मोहि कीन्ही, मृदु हँसि फेंकि अलक की जलियाँ। मोहनि मन तहवाँ धरि आई, जहँ वह तोरत फूलन-कलियाँ॥ ४६॥

देखु सखी री बिहरत बगियाँ। स्याम गौर दोउ लाल मनोहर, बांधे सुरँग रंग की पगियाँ॥ जा छिन तें निरखी वह मूरति, मैं सखि स्याम रंग में रंगियाँ। मोहनिदास छोरि सब जग को, उनके चरनन में मन लगियाँ॥ ४७॥

पूर्वी।

जनक बाग में कुँवर खड़े दोउ, निरखन चलहु सरूप री॥ मिथिलापुर में आवत ही

सखि, सकुचि गये सब भूप री। बावरि भई डोलत हौं सजनी, देखत रूप अनूप री॥ कहत परस्पर मिलि सब गोरी, यह बर सिय-अनुरूप री। मोहनिदास इनहिं जो निरखत, सो न परै भव-कूप री॥ ४८॥

जनक-बाग में आए प्रसूनहिं, लेइ गये मन मोर री, (आली)। मिथिलापुर में कहर मचायो, छलिया अवधकिसोर री, (आली)॥ तिरछी सैन की मारी कटारी, घायल कियो सब ओर री, (आली) मोहनिदास लेत मन ठगि कै, छैला चित के चोर री, (आली)॥ ४९॥

बिहाग।

लाल तुम आए क्यों इतहीं। बिहरत हौ मिथिलेस-बाटिका, खैंचत हौ चितहीं॥ मो मन लैकर अवध—छबीले, ज़ात चले कितहीं।

मोहनिदास देन दरसन को, करो कौल नित-हीं ॥ ५० ॥

हम्मीर।

लाल तेरे अजब रसीले नैन। सेत स्याम रतनार सरिस दोउ, कसकत हिय दिन रैन॥ तरफरात घायल जिय बरबस, जोर जनावत मैन। अमी हलाहल मद से छाके, निरखे परत न चैन॥ जियत मरत झुकि झूमि परत है, जेहि चितवत दै सैन। मोहनिदास जनकपुर बासिन, को चाहत मन लैन॥ ५१ ॥

(धनुषयज्ञ के पद)

सारंग।

तोर्‌यो धनुष लाल दसरथ के छाई चहुँपुर अनँद बधाई॥ भूषन बसन साजि सिय अंगनि, सोभा सुन्दर बरनि न जाई। चतुर

सखी तब कही सिया सों, पहिरावहु जैमाल सोहाई ॥ दोउ कर सों जैमाल लियो री, छकी प्रेम पहिराइ न जाई। मोहनिदास निरखि वह सोभा, बिनहिं मोल हठि गए बिकाई ॥ ५२ ॥

(बिवाह समय के, बनरा के पद)

दादरा।

आली सियाबर मन हरि लीन्हा। साँवरो रूप सलोनो सजनी, डारि बिरह फाँसी मोहि दीन्हा ॥ जालिम जुलुम करन हारो वह, निरखत ही बावरि मोहि कीन्हा। मोहनिदास माधुरी मूरति, मो चित चतुर चाहि लिखि दीन्हा ॥ ५३ ॥

आली सिया–बर मों मन बसिगो। जालिम जुलुम कियो री बरबस, आय बिरह फाँसी हँसि कसिगो ॥ ऐसो निठुर किसोर

अली री, नैन-बान मोहि मारि निकसिगो। मोहनिदास अलक जालन में हाय सखी मो मृग-दृग फँसिगो ॥ ५४ ॥

आली लखो अवधेस-दुलारो। देखत ही मन बस करि डारै, ऐसो जालिम जुलफन-वारो॥ लगन लगी मेरी राजकुँवर तें, हाय सखी जबतें हौं निहारो। मोहनिदास से मोहनी छबि पै, बरबस हिय बिकि गयो हमारो ॥ ५५ ॥

आली अवध को छैल सितमगर। बस कीन्हों सिगरी मिथिला को, मृदु मुसुकान मोहन जादू कर ॥ मैं अपनी सुधि काहि सुनाओं, छूटि गई कुलकानि सुजन-डर। मोहनिदास कियो री घायल, खैंचि भौंह मोहि मारि दृगनसर ॥ ५६ ॥

आली अवध-बनरा इत आयो। मैं

ठाढ़ी रही अपनी अटा पर, मो हियरा हठि हेरि चोरायो ॥ अलकन जुत मुखचन्द दिखा के, बावरि तेहि छिन मोहि बनायो। मोहनिदास तबहिं तें सजनी, लोक-लाज कुल-कानि गँवायो ॥ ४७ ॥

धुन नई।

सिय बनरा री बिहँसि मन लै गयो। मधुरी बोल सुनाय सखी री, मो तन लखि हँसि बावरि कै गयो ॥ भौंह—कमान खैंचि कै मोपै, नैनन-बान मारि दुख दै गयो। मोहनिदास फकीरिन करि मोहि, छबि दिखराय छिपाय किते गयो ॥ ४८ ॥

निरखन चलहु सखी सिय-बनरो। अंजन नैन दिये री सजनी, चितवत ही खैंचत हिय हमरो ॥ मोतिन को सेहरो सिर सोहै, अजब

रँगीलो जालिम सँवरो। मोहनिदास हियो कसकत है, लगिहौं गर अलि तजि सब झगरो ५९॥

मोहत मन हमरो सिय-बनरो। नाक बुलाक बिराजत सजनी, कतल करत अखियन को कजरो॥ सुभग सिंगार किये अंगनमें, लखि मुसकान उठत हिय कहरो। मोहनिदास कियो बस अपने, ऐसो है सखि जालिम सँवरो॥६०॥

सखि सिय-बर की रँगीली झाँकी। निरखन चखु री जनक-सदन में, नहिं कोउ जग उपमा है वाकी॥ पीत रंग को जामा पहिरे, सिर पगिया सोहै अति बाँकी। मोहनिदास देखि मैं आई, मोहनि मूरति अवधलला की॥ ६१॥

ठुमरी, खम्माच।

बनो सखी दूलह अजब अनूप। बंक भौंह दृग पैन बान के, चिबुक मदन को कूप॥

अलक झूमि रही चन्द्र-बदन पर, राजत सुन्दर रूप। मोहनिदास हरै हिय हँसि कै, रघुबंसिन को भूप ॥ ६२ ॥

झंझौटी।

बिलोको सखी छलिया राज दुलार; जालिम अवधकुमार। चितवत ही कतलाम करत है, हग-अंजन-तलवार ॥ सुन्दर बदन बिलोकि लला को, लाजत कोटिन मार। मोहनिदास यही जिय चाहत, दौरि मिलौ अँकवार ॥ ६३ ॥

मुलतानी।

बनरो नीको लागै बीर। बिन चितये नहिं जिय मानत है, चितये लूटत धीर ॥ कीन्हो है बेहाल जनकपुर, मारि हगन के तीर। मोहनिदास गरै लगिबे की, कौन करूँ तदबीर ॥ ६४ ॥

बागेसरी।

बनरा बनि ठनि आयो आज। अंजन नैन पान-लाली मुख, अँग अँग सुन्दर साज॥ चलु री सजनी जनकमहल में, उमग्यो प्रेम दराज। मोहनि कसि कसि अंक भेटिहौं, तजि गुरुजन की लाज॥ ६५॥

जौनपुरी।

बनरा क्यों लखि मोहि मुसकावै। मैं तो तुव रँग पागि रही हौं, और रंग नहिं भावै॥ मिथिला की बाँकी ललनन पै, चेटक मंत्र चलावै। मोहनि क्यों नहिं झपटि लाडिले, कसि कसि अंक लगावै॥ ६६॥

गारा।

बालम तुव नैना अति नीके। निरखत ही मद छाकी अँखियाँ, उठत काम हिय तीके॥

चितवत हो बेपीर चुभत चित, निकसत लेत सुजीके। मोहनि एक तुमहिं तजि अब पिय, और लगैं सब फीके॥ ६७॥

ठुमरी, चाल दूसरी।

धुन बिरहनी।

सखी लखन चलो छबि दूलह की, हम धन्य सबै मिथिला बसिकै॥ अलकैं अलि ब्यालिन सी डसिकै, घायल मोहि कीन्हो मृदु हँसिकै॥ मार्यो दृग तीर लला कसिकै, हिय छेद भयो सजनी धँसिकै॥ मन मोहनि हाय लियो रसिकै, सब त्यागि दई नेहियां फँसिकै॥६८॥

जंगला।

सखि यह अवध-छैल दिलदार, बना बनि आयो री॥ मोतिन मौर सीस पर सोहै, जुवतिन को मन छिन में मोहै, को है यहि जग बीच जो

नाहि लुभायो री ॥ मिथिला की बाँकी सुकुमारी जेती रूप गुमाननवारी, निज गुमान छबि पिय की निरखि गँवायो री ॥ मोहनि पढ़ि टोना हँसि डारत, तापर तिरछी सैन निहारत, डगर डगर यहि पुर में क़हर मचायो री ॥ ६६ ॥

धानी।

अवध-छैल सखी मों मन भायो री ॥ अंजन बाढ़ धरी नैनन में, क्या बाँकी तरवार बनायो री। कारी चटकारी घुँघरारी, अलकन में दृग खैंचि फँसायो री ॥ मृदु मुसुकान निरखि प्यारे की, छिनकहि में मन हाय बिकायो री। मोहनिदास सिया बनरे पै, लोक लाज कुल-कानि गँवायो री ॥ ७० ॥

लावनी, धुन कालिंगड़ा।

बना क्या बाँका सिय-बनरो। करी कतलाम

जनक सहरो ॥ निरखि छवि बावरि बनि डोलूं, बचन मैं बिहवल ह्वै बोलूं । नहीं कछु खबर रही तन की । भई यह दसा मेरे मन की ॥

दोहा ॥

अँखियां बांकी लाल की,
चित में चुभि गइ हाय ।
अब निकसत नहीं हे सखी,
कीजै कौन उपाय ॥

लसै उर फूलन को गजरो । करी कतलाम जनक सहरो ॥ अलक झुकि झूमि रहीं खासो। मनो हिय फँसिबे को फाँसी ॥ भृकुटि क्या कुटिल धनुष राजै । देखि छबि मनमथ हू लाजै ॥

दोहा॥

मृदु मुसकानि बिलोकि कै,
धरै जिया नहिं धीर।
मोहनिदास हिये मेरे,
रहि रहि होवै पीर॥
यही जिय है लगि जाउँ गरो,
करी कतलाम जनक सहरो॥ ७१॥

कान्हरा।

देखो री बनरा क्या प्यारा। जुलुफकुगान कियो री घायल, हाय सखी मिथिला-पुर सारा॥ आँचर रोपि यही बर मांगों, अवध-छैल पति होहिं हमारा। मोहनिदास हिये बिधि जावै, गजब नैन बाँका रतनारा॥ ७२॥

चलती।

देखो बाँको अवध को बनरो। अलकैं झूमि रहीं मुख पै री, नैन बिच कजरो॥ चारु

कपोल मन्द मुसकनियाँ, लेत ठगि हियरो। मोहनिदास, ललकि गर लगिहौं, छोरि सब झगरो ॥ ७३ ॥

मारी छैला नजरिया बगर में । औचक आय मिलो मोहि सजनी, सुयाही डगर में ॥ कहर मचायो हाय सँवलिया, या जनक-नगर में । मोहनिदास दरद नहिं छूटै लगै बिनु गर में ॥ ७४ ॥

खेमटा, धुन भूपाली ।

विलोको सखी क्या बनरा है बाँका । अलकैं अतर भरी झूमत हैं, सोहत मौर मजा का ॥ नैन अनोखे सब सुखमा को, लूटे लेत जहाँ का । मोहनिदास नारि मिथिला पै, आइ पखो है डाँका ॥ ७५ ॥

खेमटा तिहाई।

बनरा बना क्या बाँका सोहत सिर मौर॥ दीन्हें नैन बिच कजरो, बसन तन पियरो, लेत ठगि हियरो, केसर की खौर॥ घूमैं अलिन मिथिला की, प्रेम में छाकी, छबी पै लला की, सब ठौरहिं ठौर॥ होवै मेरो पति रामा, मोहनि सुखधामा, कहैं सब बामा, पूजें गनगौर॥७६॥

ग़जल धुन दरबार।

ललन अवधेस का प्यारा,
हमारा यार बाँका है।
लसै उर मोतियों गजरा,
मौर सिर पै मजा का है॥
नैन दोउ पैन अति चोखे,
अलिन मन का कजाका है।
हुई बेहाल ताही छिन,

जिधर हँसि के वो ताका है ॥
लगी जिसको लगन उसकी,
रहे नहिं लाज ढाँका है।
फिरै नित चाह में वाके,
सकल दुनियाँ से थाका है ॥
बिखर कर आ कपोलों पर,
लटकता बाल जाका है।
रहै यह मोहनी निसदिन,
उसी के प्रेम छाका है ॥७७॥

रेख़ता धुन ईमन।

सुन री सखी सहेली मेरो यार है यही।
माथे मुकुट दिये है जो दिलदार है यही ॥
हँसिकै हिया को हाय ठगनहार है यही।
धनि कौसिला को प्यारो री सुकुमार है यही ॥
ललना को कतल करने को तरवार है यही।
कह मोहनी सिया को सरदार है यही ॥७८॥

लावनी ।

बनी सिय बनरी अति बाँकी ।
नहीं है जग उपमा जाकी ॥
बैस की है अति ही थोरी ।
रूप की है अति ही गोरी ॥
हिया की है अति ही भोरी ।
यही है जनक-नृपति-छोरी ॥
लखो क्या तरहदार झाँकी ।
नहीं है जग उपमा जाकी ॥
लसै अँखियाँ दोउ रतनारी ।
फबै उर मोतिन-गजरा री ॥
सोह तन में सुन्दर सारी ।
अलक सोहत है अति कारी ॥
देखि गति चंदहुँ की थाकी ।
नहीं है जग उपमा जाकी ॥
भाल बिच बिंदा अति सोहै ।

देखि मुख रति निस दिन जोहै ॥
बरनि सक उपमा जग को है।
छबी लखि अवध-लला मोहै ॥
करूँ मैं समता यहि काकी।
नहीं है जग उपमा जाकी ॥
अजब पग नूपुरहू बाजै।
कमर में कट-किंकिनि राजै ॥
ध्यान धरने तें अघ भाजै।
यही है सखियन-सिरताजै ॥
प्रेम में मोहनि अलि छाकी।
नहीं है जग उपमा जाकी ॥ ७६ ॥

दादरा।

लखन लगी मैं ललकि लली-छबि। ब्याह-साज प्रति अंगन राजै, सिर सुन्दर मौरी की भलि छबि ॥ चोटी अजब गुही लटकत है, कारी नागिनियाँ की दली छबि। मोहनिदास

पिया अँखियन को, बरबस सिय बनरी की छली छबि ॥ ८० ॥

(बिदाई)

आसावरी।

काहे जाओ रे अवध मन भावना रे ॥ तुम बिन धीरज नहीं जिय धरिहैं, नैनन तें अँसुआ नित झरिहैं, लिखि लिखि पतियाँ प्यारे हमहिं पठावना रे ॥ जब करिहौं तुव सुरत दुलारे, होइहौं बिकल लखे बिन थारे, कबहुँ कबहुँ मिथिलापुर महियाँ आवना रे ॥ जब तें गवन सुनी है लाला, मोहनिदास भये बेहाला, करिके कृपा सँवलिया दरस दिखावना रे ॥ ८१ ॥

गौरी।

बिदेशी सैयाँ टुक मेरी बात तु मान। नेह लगाई मोर मन लैके, अब कित जात

सुजान ॥ मिथिलापुर संकेत-बिपिन में, झुकि रहि अजब लतान। मोहनि के सँग दै गल बाहीं, बिहरहु रूप निधान ॥ ८२ ॥

अलहिया।

दरसन देना अवधपुर-वारे। करिके प्रीति फँसाय छैल मोहि, अब क्यों अवध पधारे ॥ तुम बिन जिय घबरै है मेरो, सुनिये राज-दुलारे। मोहनि–दास निबहियो नेहियाँ, भूलि न जैहो प्यारे ॥ ८३ ॥

चलती।

काहे के छैला अवधपुर जाओ। भौंह तीर सों घायल कै के, गजब तरसाओ ॥ सुखमा-सिंधु रूप-गुनवारे, दरद हिय लाओ। मोहनिदास बिरह की मारी, मोहि जिला-ओ ॥ ८४ ॥

काहे के जाओ अवधपुर लाला। जब करिहौं तव सुरति सँवलिया, गड़ैगो उर भाला॥ करिकै हाय प्रीति अब प्यारे, क्यों देत कसाला। मोहनिदास बिकल ह्वै बोलैं, सुमिथिला बाला॥ ८५॥

तिहाई खेमटा, धुन झंझौटी।

अइहौ बहुरि मिथिला में, अरजी मेरी मान। दैहौं मैं सुख अँखियन को, लखि मृदु मुसुकान॥ करिहौ गरे लपटा के, मों सीतल प्रान। बिनती सुमोहनि की है, सुनु अवध-सुजान॥ ८६॥

देस।

() अँखिया तुव दरसन की प्यासी। जिमि चकोर मन चंद लखे बिन, घेरे रहत उदासी॥ दरसन देहु बिदेह-लली-पिय, जानि आपुनी

दासी। मोहनिदास बेगि अब काटहु, बिरह-बिथा की गाँसी॥ ८७॥

सोरठा।

अवध को मैं जैहों ललन सँग आज। बिन पिय के डसिहैं नागिन सम, मोकों सब सुख साज॥ सुनहु सखी मोहि अब गुरुजन के, हाँसी को नहिं लाज। मोहनिदास यार छैला बिन, नाहिं जगत सों काज॥ ८८॥

ईमन कल्यान।

सँवलिया प्यारे कसक मिटाओ रे। तुम बिन छिन छिन बीतत जुग-सम, क्यों तरसाओ रे॥ मो मन बस करि अवध-छबीले, जिन इतराओ रे। मोहनिदास विदेह लली पिय, दरस दिखाओ रे॥ ८९॥

बिहाग ।

ललन काहे ऐसी धरी निठुराई । मैं गरजी बिनवौं तुम पाहीं, तौ नहिं होत सुनाई ॥ पहिले प्रीत हाय करि प्यारे, अब काहे बिसराई । मोहनिदास अवध-पिय तुम बिनु, पीर सही नहिं जाई ॥ १० ॥

जैजैवन्ती ।

सँवलिया प्यारे तुम बिन कल न परै । कहर मचै मुख बैन न आवै, नैनन नीर झरै ॥ रैन दिना मोहि तलफत बीतत, रहि रहि पीर करै । मोहनिदास सिया-बनरे बिनु, जिय नहिं धीर धरै ॥ ११ ॥

अलहिया ।

हमें दुख दै चले अवध-कुमार । करि मन बस अपने तुम प्यारे, बिरह-फाँसुरी डार ॥

उठि है प्रबल प्रचंड ज्वाल अँग, बहिहै दृग जल-धार। मोहनिदास बहुरि आवन को, जाहु किये एकरार ॥ ६२ ॥

देस।

लाल अब दिवस बहुत गये बीत जो ऐसी करनी ही प्यारे, कीन्ही काहे प्रीत ॥ अवध-छैल दिलदार सँवलिया, तुम बिन कोउ नहिं मीत। मोहनिदास हाय तरसावो, चहिये नहिं यह रीति ॥ ६३ ॥

आसावरी।

कोइलिया रे बोलत डारन डार ॥ रितुपति आइ गयो री सजनी, चहुँ दिसि छाई है बहार। बौरे विपिन रसाल सखीरी, गुंजत भौंर अपार ॥ विरहिन प्रान बचै किमि आली, बिन पिय अवध-कुमार। मोहनिदास बिकल ललना-हिय, नैन बहत जलधार ॥ ६४ ॥

विहाग ।

भँवरवा राखत रस सों काम । नई मंजरी लखि रसाल की, मेड़रत आठों जाम ॥ कमल-कली बिकसत ही सजनी, त्यागि देत है आम मोहनि–दास पर्‌यो याही सों, लोभी वाको नाम ॥ ६५ ॥

(विरह निवेदन)

भैरवी ।

अवध-सैयाँ अब मोहि दरस दिखाव । कब की मैं तुव राह निहारहुँ, दरद नेक हिय लाव ॥ रूप–सुधा दिखलाके मेरे, प्यासे दृगन जुड़ाव । मोहनिदास तुम्हे देखन को, बढ़ो हिय बिच चाव ॥ ६६ ॥

बडारी ।

छैल मोहि टुक मुखड़ा दिखला जा । मो संग पिय प्रमोद-कुँजन में, नित नव सुख उपजा

जा॥ झपटि अंक भरि भेटि भुजन सों, हिय की तपन बुझा जा। मोहनिदास विदेह लली-पिय, जी की हौंस पुरा जा॥ ६७॥

मधुमातंग।

तुम बिन कैसे मैं राखूं प्रान। बावरि सी गति हाय भई है, त्यागि दई कुलकान॥ दरसन दीजै मोहि सँवलिया, लागत सून जहान। मोहनिदास अरज सुनि लीजै, प्यारे अवध सुजान॥ १८॥

सिन्ध।

अवध-सैयाँ ऐसो न रार करो। तुम बिन पल पल कटत कल्प-सम, दृग तें न नेक टरौ॥ लगी लगन छूटन को नाहीं, यह चित मोहिं धरौ। मोहनिदास सँवलिया प्यारे, मेरी पीर हरौ॥ १६॥

अलहिया।

सँवलिया तेरी कहर करै मुसकान। जो तुव लाल हँसन निरखत है, भूलि जात सब ज्ञान घूमि गिरत घायल ह्वै छिति में, राखत नहिं तन प्रान। मोहनिदास विदेह–लली–पिय, त्यागि देहु यह बान॥ १००॥

भैरव।

नैनवा तुव चरनन में लगे, सुनहु विदेह लली-पिय तुमरी, माधुरि मोहि पगे॥ दूजो रंग चढ़ै नहिं अब तो, तुमरेइ रंग रंगे। मोहनिदास चोर चित के तुम, मो मन आइ ठगे॥ १०१॥

टोडी।

रही हौ पिय तुव छबि पै मैं लुभाय। सुनु रघुनन्दन प्रान–पियारे, तुम बिनु कछु न सोहाय भूलत नहिं प्रमोद बन भेंटन, कोमल भुज सो

धाय। मोहनि भई चेरी चरनन की, बेगि लेहु अपनाय ॥ १०२ ॥

कान्हरा।

दरद अब हरिए अवध-सुजान। नैनन नीर बहै निसि बासर, चुभि गई मृदु मुसुकान॥ जब ते झलक दिखायो छैला, तलफत है मम प्रान। मोहनिदास कसक मेटौ अब, करौ सुसी-तल प्रान ॥ १०३ ॥

सारंग।

सँवलिया प्यारे काहे करत हो रार। ऐसी लगन लगी है तुम से, छूटै नहिं दिलदार॥ चैन पड़ै नहिं बैन कढ़ै नहिं, नैन बहत जलधार। मोहनिदास दरद हिय लाओ, दसरथ राज-दुलार ॥ १०४ ॥

खेमटा ।

दरसन दीजै रंगीले प्यारे । बिन निरखे मोहि कल न परत है, बिनती सुनिये अवध-दुलारे ॥ ल्यो अपनाय साँवरे मोको, तलफत हैं नित प्रान हमारे । मोहनिदास यही बर माँगत, नैनन तें छिन होहु न न्यारे ॥ १०५ ॥

चलती ।

नैना लगा के गयो कित छैला । रहल न जाय तुम्हें बिन देखे, फिरूँ नित गैला ॥ अवध छैल तुम बिनु निस दिनवाँ, कहरवा मचैला ॥ मोहनिदास हिय मेरे प्यारे, दरदवा उठैला १०६ ॥

प्यारे तेरी कहर कर-अलकैं । रहि रहि नागिन सी उर लोटैं, लगै नहिं पलकैं ॥ अवध-छैल पिय तेरे दरस को, नयनवा ललकैं ॥ मोहनिदास लियो मन मेरो, सँवलिया छलकैं ॥ १०७ ॥

ग़ज़ल।

तिहारे नैन चोखे हैं रंगीले।
सुनो अवधेस के बाँके छबीले॥
किया कतलाम सब नारी वो नरको।
अजब ये सैफ-धारों से चुटीले॥
उठी आहे जिगर मुझको तभी से।
धँसे उर में मेरे जब ये नुकीले॥
नहीं लगता हमारा मन कहीं पर।
न हो क्यों ऐसा है हिरदै हरीले।
फिरै नित मोहनी बौरिन सी मग में।
लखे हैं जब से ये नैना रसीले॥१०८॥
किया कतलाम क्या प्यारे हमी को।
नहीं घायल किया तुमने सभी को॥
अगर करना था तुमको हाय ऐसा।
तो क्यों पहिले लिया मृदु हँस के जी को॥

तुमारी खोज में फिरती हूं निस दिन।
कभी सहरा कभी इत उत गली को ॥
झलक अपनी दिखा दे अवध-छैला।
सभी कुछ मोहनी को लाग फीको ॥१०९॥

धुन दूसरी।

मुझको दरसन दीजिये ऐ चित के चोरानेवाले।
जुल्फ के जाल में हा सब को फँसानेवाले ॥
तन को अपने खो दिया हाथों से तेरे इश्क में।
अब तो टुक मुझ पै रहम कर नैन लोभानेवाले ॥
मैं पड़ी घायल पुकारूँ तुमको दर्द आता नहीं।
कुछ तो सुनिये सैन के ऐ साँग चलानेवाले ॥
अवध के छैला सुनो मेरी अरजी इतनी ही है।
लो लगा सीने से मुझे मरते को जिलानेवाले ॥
टुक झलक अपनी दिखादो मोहनी को ऐ सनम।
हो रहा बेहाल बाँके बैन सुनानेवाले ॥११०॥

इश्क़ तेरा लाड़िले हरदम सताता है मुझे।
ऐसे दुनिया अब नहीं कुछ भी सोहाता है मुझे॥
ऐ सनम अवधेस प्यारे टुक झलक अपनी दिखा।
रात दिन रोतेहि रोते बीत जाता है मुझे॥
तेरी जुल्फों में मेरा मन हाय जाकर फँस गया।
कुछ नहीं तदबीर अब प्यारे बताता है मुझे॥
तेरे बिन तसकीं नहीं दिलको अरे दिलदार यार।
झट गले लग के मेरे क्यों ना जिलाता है मुझे॥
मोहनी बेहाल हो फरयाद करते तेरे द्वार।
हाय ना रूपे-सुधा हँसके पिलाता है मुझे १११
ऐ सनम तेरी मोहब्बत में दिवाना हो गया।
राख सहरा में मुझे सिर पै उड़ाना हो गया॥
एक तेरे ही लिये बदनामियाँ कितनी सहीं।
तिस पै तेरी चाह में आँसू बहाना हो गया॥
अब शजर मेरे जिगर फिर इश्क का पैदा हुआ।

हौसला लाखोंहि खाकों में मिलना हो गया॥
बेवफा माशूक से दिल के लगाने का मजा।
हाय यह मुझको मिला आफत उठाना हो गया
मोहनी कहता दिले मुजतर मेरी ऐ बेवफा।
तेरे अब्रू तेग़ का अब तो निशाना हो गया ११२

लावनी ।

मैंने ये इश्क में सबको छोड़ा प्यारे।
पर सुना न तू ने मेरी अवध-दुलारे॥
बिन तेरे मुझ को तनिक चैन नहिं आवै।
जिय धीर धरै नहिं नेक हाय घबराव॥
इत उत मैं घूमों नहिं कुछ मोहि सोहावै।
बिन दरसन दुखियाँ अखियाँ अति अकुलावै॥
मैं निश दिन हा हा करती राज-कुमारे।
पर सुना न तूने मेरी अवध-दुलारे॥
मोरे-कसकत हियरा जुलुफन की छबि न्यारी।

करि सुरत सँवलिया बहत दृगन तें बारी॥
मोरी कौन हेत तुम प्यारे सुरत बिसारी।
रहि रहि मेरे तन उठत पीर अति भारी॥
भये मोहिनी दास बेहाल लखे बिन थारे।
पर सुना न तूने मेरी अवध दुलारे॥ ११३॥

बिन दरसन तेरे रघुबर चैन न आवै।
कितनो समुझाऊँ जिय को धीर न लावै॥
घर बन अरु उपवन मोहि न नेक सोहावै।
रहि रहि हिय मेरो हाय अधिक घबरावै॥
मैं कैसे धारूँ धीर नहीं कछु भावै।
तुव छबि देखे बिन लाल नैन अकुलावै॥
भई हाय कौन तकसीर कोई न बतावै।
है बुरा इश्क जो गलियन माँहि नचावै॥
बिन तेरे नहिं कोउ हितू जो मोहिं समुझावै।
अब क्यों नहिं मोहनिदास को झलक
दिखावै॥ ११४॥

मन बिहँसि झमकि ले गैयो अवध को लाला ।
भई हाय बेहाल बेहाल बेहाल बेहाला ॥
ता छिन तें सखि मोहिं हाय भवन नहिं भावै ।
जहँ जाऊँ सूनो लगै जिया घबरावै ॥
कर मीजत हौं पछितात नैन जल आवै ।
बिन प्रीतम के कोई नहीं जो दरद मिटावै ॥
मनमृग पकस्यो फैलाई अलक की जाला ।
भई हाय बेहाल बेहाल बेहाल बेहाला ॥
मोरे करत करेजे कहर नैन की अनियाँ ।
मोहि बिसरत नहिं छिन एक बंक चितवनियाँ ॥
जब तें मैं देख्यो अली मन्द मुसुकनियाँ ।
हरि गयो हिये को चैन कसक तन मनियाँ ॥
कहे मोहनिदास गड़यो हिय प्रेम की भाला ।
भई हाय बेहाल बेहाल बेहाल बेहाला ॥ १५ ॥

वाल्मीकि शोध संस्थान
श्री मणिराम दास छावनी सेवा

खेमटा तिहाई ।

नैना लगा के सँवलिया, कित छिपि गयो जाय ॥ बरसे रैन दिन नैना, कढ़े नहिं बैना, पड़े नहिं चैना, कछू मोहिं न सोहाय ॥ तलफूँ डगर बिच प्यारे, दरस बिनु थारे, सुनहु सुकुमारे, जियरा घबराय ॥ मारो बिहँसि दृग-भाला, अवध को लाला, मोहनि बेहाला कसकत हिय हाय ॥ ११६ ॥

छैला अवध मन मेरो हँसि के ठग लीन्ह ॥ अलकैं अतर भरी कारी, गजब घुँघुरारी, अजब चमत्कारी घायल डसि कीन्ह ॥ अँखियाँ लसत रतनारी, लगत अति प्यारी, हरिन-हिय-हारी, चित चुभि दुख दीन्ह ॥ फिरे मोहनि सुडगर में, जु छैल नगर में, चवाई कगर में हँसते मोहिं चीन्ह ॥ ११७ ॥

बरवा।

हाय सखी छैला मिलो री सपने। मैं साई रही गरवाँ लगा के, कियो बस अपने॥ ता छिन तें मैं निस दिन लागी, अवध-पियो जपने। मोहनिदास बिरह की मारी, लगी मैं तपने॥११८॥

(सखी-प्रति, सखी-बचन)

भैरव।

आली रघुबर की छबि लखि लीजै। अलकन मो मन फाँसि लियो है, प्रान निछावर कीजै॥ लटकन की छबि अजब बनी है, उपमा केहि की दीजै। मोहनिदास बेगि चलि सजनी रूपसुधा-रस पीजै॥ ११९॥

भैरवी।

लाल अवधेस बिलोकौ बीर। भृकुटी बाँकी तेज सैफ सी, अँखियां चोखी तीर॥ जुलुफ

जाल में मन-मृग फँसिगो, छूटि गयो हिय धीर। मोहनिदास डगर में घूमे, उठी कठिन हिय पीर ॥ १२० ॥

बंगाली।

सँवलिया के नैन किधौं समसेर। जेहि चितवत घायल करि डारत, करत तनिक नहिं देर ॥ कहरत गिरत भूमि में तलफत, सिसकत उठत न फेर। मोहनिदास आपु मन-मृग यह, बरबस होत अहेर ॥ १२१ ॥

बैरारी।

सँवलिया के सोहत भौंहँ-कमान। छिन में घायल करत अली री, रहत न तन में प्रान॥ अब मिथिला बसिहै को सजनी, लखि पिय की मुसुकान। मोहनिदास नैन छैला के हैं मन-मथ के बान ॥ १२२ ॥

मधुमाधवी।

नैन दोउ जहर बुझी तरवार। वार करत हिय लहर चढ़त है, ऐसी गजब की धार॥ बिहवल ह्वै डोलत गलियन में, तन की न रहत सम्हार। मोहनिदास करै बस अपने, अवध-छैल दिलदार॥ १२३॥

सिन्ध।

लाल की मृदु मुसुकान लसै। बरछी-नोक सरिस री सजनी, हिय बिच आनि धँसै॥ अवध-लला जालिम के जाल में, जो कोउ आइ फँसै। मोहनिदास नेह सों जकरे, फेर नहीं निकसै॥ १२४॥

मालकौस।

म लाल की अलकैं अतर-भरी। चारु कपोलन पै इत उत सखि, झूमत हैं

बिखरी ॥ कहर करैं निरखत ही सजनी, बावरि मोहि करी। मोहनिदास कतल करिबे को, हरदम सान-धरी ॥ १२५ ॥

गौरी।

सँवलिया के मुख पै केस सोहाय। मानहुँ कंज-पराग लेन हित, अलिगन पहुँचे धाय ॥ रूप-छबी-सर में सिंगार को, कै सेवार सरसाय। मोहनिदास अमी-हित बिधु पै, नागिन सी लहराय ॥ १२६ ॥

गुनकली।

या छलिया ने जादू डारा ॥ औचक मृदु मुसुकाय सखी री, मो तन नेक निहारा। बावरि ह्वै गइ ताही छिन तें, लखि अवधेस दुलारा ॥ तन मन की सब बिसरि गई सुधि, बहत दृगन जलधारा। मोहनिदास तऊ नहिं मानत, ऐसो जालिम प्यारा ॥ १२७ ॥

खंभायत।

मो मन-मृग को फाँसि लियो है, हाय अलक के जालन सों री। घायल कीन्हों अवध-लाड़िलो, मारि नैन के भालन सों री॥ लगी प्रीत छूटै नहिं अब तो, कीन्हें ऐसी चालन सों री। मोहनिदास कहो जाके अलि, यह सँदेस मेरो लालन सों री १२८॥

ठुमरी धुन टोडी।

जो निरखै एक बार लाल को, ताकी अजब दसा ह्वै जावै। छिन बिह्वल ह्वै हँसत छिनहिं छिन, छिन उमगत छिन छिन बिलखावै॥ छिन भटकत गलियन में इत उत, छिनहिं सदन छिन बनहिं परावै। मोहनिदास बकत छिन छिन वह, छिन छिन नैनन नीर बहावै॥ १२९॥

कुकुभि रागिनी।

कहूँ सखी देख्यो है अवध-कुमार, छैला राज-दुलार। नैनन मारि छिप्यो कुंजन में, जालिम मेरो यार॥ प्रीतम सों सखि मोहिं मिलाओ, करौ यहै उपकार। मोहनिदास कसक मिटिहै नहिं, मेंटे बिनु अँकवार॥१३०॥

हिंडोल।

भमकि मन लै गयो अवध-किसोर। कब की खड़ी मैं राह निहारहुँ, तलफि तलफि भयो भोर॥ मैं बिरहिन घायल इत तलफत, गड़ी दृगन की कोर। दै गयो दुख लैकै मन मोहनि, ऐसो निठुर चित-चोर॥१३१॥

रामकली।

लाल मोहिं बावरि कै गयो री। अवध-छबीले आइ मेरे ढिग, हाय सखी

दुख दै गयो री ॥ मंद-हास अरु गजब चाल सों, प्यारे मन हरि लै गयो री ॥ मोहनि-दासहि झलक दिखाके, छैला छटकि कितै गयो री ॥ १३२ ॥

पटमंजरी ।

सहेली मेरो मन मोह्यो राज-दुलार । बन प्रमोद में मिल्यो अचानक, ठग-हारन सरदार ॥ तब तें पगी साँवरे रँग में, कछु नहिं परत निहार । मोहनिदास तबै दुख जैहै, भेंटूँ भुजन पसार ॥ १३३ ॥

देवसाखी ।

ललन हँसि नैन-कटारी मारी । बन प्रमोद में जात रही मैं, मोहनि मोपै डारी ॥ मो मन लेकर हाय चलो गयो, तलफूँ डगर मझारी । मोहनिदास बिदेह-लली-पिय, खासे बने सिकारी ॥ १३४ ॥

ललित।

ललन हँसि कीन्हीं सब बिधि ख्वारी। बन प्रमोद की कुंज-गलिन में, मारी नैन कटारी॥ तन की सुधि सब बिसरि गई जब, मोहनि-मूरि निहारी। मोहनिदास कियो बस अपने, प्रेम फाँस गर डारी ॥१२५॥

बिलावल।

सँवलिया मो पै जादू डारि दियो। बन-प्रमोद की कुंज-गलिन में, मो मन मोहि लियो॥ झलक दिखाइ छैल तरसावत, बावरि मोहि कियो। मोहनिदास बिना प्रीतम के, तलफत हाय हियो॥ १२६॥

नट नारायण।

बिहँसि मोहि मारी नैन-कटार। लोनी कुंज-लतन में सजनी, अवध-छैल

सुकुमार ॥ बसीकरन कोउ मंत्र सिखा दे, मनिहौं यह उपकार । मोहनिदास चलाइ सखी री, बस करिहौं दिलदार ॥ १३७ ॥

देस ।

लख्यो मैं जब तें अवध-किसोर । नैनन नीर बहै निसि बासर, पीर उठत तन जोर ॥ खान पान भावै नहिं सजनी, कसकत है हिय मोर । मोहनिदास लेइ मन छिपिगो, ऐसो वह चितचोर ॥ १३८ ॥

नट ।

लाल बिन कसकत हियरा मोर । जब तें हँसिनि-तीर उर मारी, दरद उठत तन जोर ॥ बिरह-बिथा सों ब्याकुल सजनी, बिन पिय अवध-किसोर । मोहनिदास बावरी करिके, छिपिगो कित चित-चोर ॥ १३९ ॥

ठुमरी, धुन, काम्हरा।

बन प्रमोद में मिलो अचानक, दृग सों जादू मारा रे। मृदु मुसुकाय अदा सों प्यारे, तिरछी सैन निहारा रे॥ बैन कढ़ै नहिं ता छिन तें अलि, मोहिं बावरि करि डारा रे। मोहनिदास ऊधमो ऐसो, दसरथ-राज-दुलारा रे॥ १४० ॥

केदारा।

ठाढ़ो रे प्रमोद-बन अवध-दुलारो रे॥ लटपट चाल अनोखी झाँकी, देखत हिय ठगि जात हमारो रे। बोलत बचन सुधा जनु बरसत, चितवन में टोना पढ़ि डारो रे॥ यह निकुंज-बन कहँ तू आई, कहि मो तन हँसि नेक निहारो रे। मोहनिदास सुनै पिय-बतियाँ, नैनन तुरत नेह-जल धारो रे॥ १४१ ॥

कामोद।

आजु अवध-पिय को मैं रिझैहौं। सुन्दर फूलन को गजरा गुहि, निज कर लाल हिये पहिरैहौं॥ बीन लेइ मधुरे सुर सों सखि, बिहँसि नई नइ तान सुनैहौं। मोहनिदास कुंज–छहियन में, लपटि अंक उर तपन बुझैहौं॥ १४२॥

कालिंगड़ा।

मोपै नैनों से जादू डार दिया, तलफत मेरो हाय हिया। मैं प्रमोद-बन जात रही री, लखि मो तन मन मोहि लिया॥ बिहवल ह्वै सखी इत उत डोलूं, मोहिं बावरि हँसि हेरि किया। मोहनिदास करी ऐसी गति, जालिम जोर सिया को पिया॥ १४३॥

पूर्वी।

कहवाँ मैं ढूँढूँ री अवध-छैल को, जिन मेरो मन हरि लीन री। नैन—बान सों मारि सँवलिया, घायल मोकों कीन री॥ झलक दिखाइ बावरी करिके, हाय गजब दुख दीन री। मोहनिदास बिना पिय तलफूँ, जैसे जल बिनु मीन री॥ १४४॥

काफी।

सजनी अवध—छैल बिनु, हिय कसकत दिन रैन। बिन देखे जुलुफन—जुत आनन, अब तो परत न चैन॥ धँसे नैन हिय बेधि सखी सुनु, आवत मुख नहिं बैन। मोहनिदास बिना प्रीतम के, भावत नहिं अब ऐन॥१४५॥

दादरा।

देखन को दृग ये तरसत हैं। बिन देखे प्यारी छबि पिय की, दोऊ नैना निस दिन

बरसत हैं ॥ अवध किसोर चोर चित के सखि मो मन लेइ बड़े हरसत हैं। मोहनिदास बड़े भागी वे पिय को पद जिन नित परसत हैं॥ १४६ ॥

खेमटा।

छयल कहँ गैले, सखि मन हरिया। ऐसे जालिम नैन लला के, निरखे चढ़त जहरिया॥ ब्याकुल होउँ पीर के मारे, रहि रहि उठत लहरिया। मोहनिदास छैल मिलिबे की, सूझ न हाय डहरिया ॥१४७॥

श्रीराग।

// सखि अवधेस-छयल चित-चोर। बन-प्रमोद के मारग में सखि, आजु मिल्यो अति भोर॥ मृदु मुसुकाय निहारि अलीरी, हनी दृगन की कोर। मोहनिदास तबहि तें सजनी, बस कीन्हों मन मोर ॥१४८॥

धनाश्री ।

हौं इन अंखियन तें अब हारी । सर्बस त्यागि दियो छिनही में, परबस ह्वै दइमारी ॥ हटकत हौं वहु मानत नाहीं, प्रेम छकी मतवारी । मोहनि इत उत भटकत डोलत, कुल की कानि बिसारी ॥ १४९ ॥

आसावरी ।

जब तें साँवलिया चित चोस्यो । तबतें घर हगवर सों लागत, मातु पिता मुख मोस्यो ॥ पतनी हूँ कहि मोहि बावरो, सहज सनेहहुँ छोस्यो । यह लखि मोहनिदास रामसों प्रेम अनूपम जोस्यो ॥ १५० ॥

अभिलाष ।

पीलू दादरा ।

रघुबर तीखी तिहारी हैं अँखियाँ । छिन नहिं धीर धरत सुनु प्यारे, एक बार जो

लखियां ॥ रहि रहि पीर उठत पांसुरि में कहरत हैं सब सखियाँ । मोहनि तुमहिं अंक भेंटे बिनु, नहिं कोउ प्रानन रखियाँ ॥ १५१ ॥

देस ।

मोहत चित्त हमारा रे, मन मोहन रूप तिहारा रे । कहर करत हिय मेरे रहि रहि, सुनु अवधेस-दुलारा रे ॥ चैन परत नहिं रैन दिवस मोहि, बिरह-ज्वाल तन जारा रे । मोहनिदास अंक भेंटे बिनु, हृदय धीर नहिं धारा रे ॥१५२॥

मालसिरी ।

रघुबर नैन तेरे रतनार । चितवत ही घायल करि डारत, कोर कटाछनि मार ॥ बरबस मो मन ठगे लेत हैं, ठगहारन सरदार । मोहनिदास निरखि तुव मूरति, लाजत काम हजार ॥ १५३ ॥

मेघ।

रघुबर नैन-कटार तिहारी। चितवत ही मन-मृग घायल है, तलफत डगर मझारी॥ जेहि देखत तेहि बस करि राखत, करिये हाय कहा री। मोहनिदास सरन तुव आयो, तन मन धन सब वारी॥१५४॥

भूपाली।

तिहारे प्यारे नैन मैन के ऐन। दुख को दैन लैन हियरे को, थारी बाँकी सैन॥ चैन पड़ै नहिं बैन कढ़ै नहिं, छिन दृग-पलक लगै न। मोहनि हिय कसकैन रैन दिन, ऐसे तीखे पैन॥ १५५॥

गजरी।

अनोखे छैला मारी हमहिं दृग-सैन। रहि रहि जिय अकुलात सखीरी, आवत नींद

न नैन ॥ कल नहिं परत धीर नहिं धारत, कसकत हिय दिन रैन । मोहनिदास निठुरता त्यागहु, तुम बिनु परत न चैन ॥ १५६ ॥

ठुमरी, धुन देसकार ।

काहे प्यारे हमहिं नजरि कसि मारी रे । भौंहन-कमान कसि लाड़िले अवध सैंया, पढ़ि कछु मूठि मोपै डारी रे ॥ बावरी सी डोलूं मैं तो थारे बिन प्यारे जू, इत उत डगर मझारी रे । अलकन फाँसि मन झलक देखाओ नहीं, करिके मोहनि कर ख्वारी रे ॥ १५७ ॥

चलती ।

मोहना प्यारे हमारी गली आ जा । हाय पुकारूं खड़ी मैं कब की, सुझलक दिखा जा ॥ छैला अवध ऐसी नहिं चहिये, दरद हिय ला जा । मोहनिदास बिहँसि मोहि प्यारे, सुकंठ लगा जा ॥ १५८ ॥

(होली के पद)

काफी।

होरी अवध–छयल सँग, खेलत जनक ललौ। भरि पिचुकारी अँग पर डारत, गाल गुलाल मली॥ तापर नैनबान हँसि मारत, घायल करत अली। मोहनिदास रूप दोउन कै, मोकों आइ छली॥ १५६॥

पीलू।

होरी जनक–लली सँग खेलत राजकुमार। अबिर उड़ावत धूम मचावत, गावत राग धमार॥ मलि गुलाल मुख चूम लेत हँसि, अवध-छयल दिलदार। मोहनिदास प्रेम में दोऊ, सुधि बुधि दीन्ह बिसार॥ १६०॥

काफी।

होरी खेलत सिय सँग, प्यारे राजकुमार॥ जुरि आई सखियां चहुं दिसि तें, गावत राग

धमार। जोबन-मतवारी सब प्यारी, रूप-गुनन उँजियार॥ अबिर उड़ावत झोरिन भरि भरि, अरु मूठिन की मार। धुन्ध मच्यो चहुं दिसि तेहि औसर, सूझ न हाथ पसार॥ अस औसर लखि एक छबीली, पकरयो पिय दिलदार। लपटि अंक भरि करि मन मानी, रूप-गुमानी नार॥ कटि फेटो धरि हँसि पुनि बोली, फगुआ देहु हमारे। मोहनिदास बिके लखि यह छबि, तन नहिं रही सम्हार॥ १६१॥

काफी चाल दूसरी।

होरी खेलत सिय रघु—लाल, पिचुका हाथ लिये॥ घोरि कमोरिन रँग बरसावत, झोरिन उड़त गुलाल॥ कारी अलकें अतर भरी हैं मनहुं मदन को जाल॥ चूमत बिहँसि बदन अलियन को, मीड़त अबिर सुगाल॥ सराबोर

रँग में हैं दोऊ, उर फूलन की माल ॥ फागके ख्याल छके पिय प्यारी, नितहिं नई नइ चाल॥ मोहनि बस में करत छिनक में, प्रेम-फाँस हँसि डाल ॥ १६२ ॥

काफी, चाल तीसरी।

राजत सिय सँग राज–दुलारे ॥ झेलत रंग बिहँसि भुज मेलत, खेलत फाग पियारे। चूमत मुख झूमत लटकारी, घूमत दृग रतनारे। चलत बहु रंग फुहारे ॥ अबिर उड़ावत धूम मचावत, गावत राग धमारे। मृदु मुसकावत सैन चलावत क्रीट मुकुट सिर धारे। साज सब बाजत न्यारे॥ लपटत झपटत रपटत रँग में, अलियन सँग सु-कुमारे। छैलहिं पकरि नचायो प्यारी, नैन मैन सर मारे। छई चहुं ओर बहारे ॥ पियहिं तबै छोड़्यो सुकुमारी, जब मुख तें कह्यो हारे।

मोहनि यह छबि देखि मगन भये, लखत एक टक ठारे। टरत नहिं नेकहुं टारे॥ १६३॥

रामलला सिय खेलत होरी॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, अबिर उड़त भरि झोरी। छाई गुलाल चहुं दिसि सजनी, नभ में भानु छिपोरी तनिक नहिं दीठि परोरी॥ भरि पिचकारी अँग पर डारत, घोरत रंग कमोरी। होरी गावत अ-वध-छैल सँग, श्री मिथिलेस-किसोरी। मलत मुख में मिल रोरी॥ नैन-सैन हँसि मारि लाल तुम, घायल करि सब गोरी। मोहनिदास फाँसि अलकन में चले कहा कित ओरी। अरज सु-नियै एक मोरी॥ १६४॥

सहाना।

होरी खेलत अवध-बिहारी दैया। रंग डारत भरि पिचकारी दैया॥ भरि भरि अबिर गुलाल

कुंकुमा, मारत तकि तन प्यारी दैया ॥ पकड़ि लियो कर बिहँसि लाल को, निमिकुल की उँजियारी दैया ॥ यह लखि चहुं दिसि तें सब ललना, उमड़ि परीं मतवारी दैया ॥ कंचुकि-बंद पिया के कसिकै, पहराई तन सारी दैया ॥ अँग अँग सुन्दर भूषन सजिकै, नचन लगीं दै तारी, दैया ॥ मोहनिदास निरखि यह नइ छबि तन मन सुरति बिसारी दैया ॥ १६५ ॥

सखि होरी में धरि लैहों लाल। रँगिहों रंग में मलिहौं गुलाल ॥ सबहिं दिना की कसर मिटैहों, बिंदी रचिहों दौरि भाल ॥ पियहिं ओढ़ाइ सुरंग चूनरी, पहिरैहों मोतिन की माल॥ जावक पद काजर नैनन में, बिहँसि गोदनवाँ लगैहों गाल ॥ मोहनिदास अवध छैला को, झमकि नचैहों बनाइ बाल ॥ १६६ ॥

पूर्बी।

होरी कुंजन बिच माँचि रही है, श्रीसरजू के तीर रे॥ नवल-छबीली निरतत चहुँ दिसि मध्य सीय रघुबीर रे॥ चलत रंग केसर पिच-कारी, तापर उड़त अबीर रे॥ अलि बिलसत हुलसत छबि सरसत, दरसत पँचरँग चीर रे॥ मोहनिदास फाग में सरजू, भई भारती-नीर रे॥ १६७॥

लावनी।

होरी खेलत आज सिया सँग अवध-दुलारो।
मारत गुलाल भरि मूंठि बिहँसि सुकुमारो॥
रँग भरि पिचुकारिन कनक बदन तकि डारो।
कबहूं मुख चूमत झपटि अंक मिलि प्यारो॥
कुंडल कपोल पर करत कलोल सु न्यारो।
अलकैं छुरि लटकत निरख मदन मद हारो॥

छबि छटा छिटकि रहि चहुँ दिसि अजब निहारो।
अलियाँ मिलि मिलि हँसि गावत राग धमारो॥
यह केलि कलोलन छको हियो मतवारो।
लखि मोहनिदास जुगुल छबि तनमन वारो॥

कालिंगड़ा।

खेलत प्यारी सँग होरी रे, बिहँसि करत झकझोरी रे॥ करि सरबोर मारि पिचकारी, फेर मलत मुख गोरी रे॥ चूमि लेत हँसि पिय मयंक मुख, कबहूं जनक किसोरी रे॥ तारा-गन-सम सुन्दर ललना, छाइ रह्यो चहुं ओरी रे॥ मोहनिदास अपूरब जोरी, की छबि लखि त्रिन तोरी रे॥ १६६॥

चलती।

होरी खेलैं नवल दोउ रनिया॥ लै पिचकारि बदन तकि डारे, अबिर मुख लसिया॥

पियहि गुलाल भरि अलकन में, अलिन मन फँसिया ॥ मोहनिदास सिया रघुबर की, छबि उर बसिया ॥ १७० ॥

खेमटा, तिहाई।

देखो छललवा, ठाढ़ो सरजू के तीर ॥ तकि के बदन ललना के, मीड़ै सु अबीर। लपटी नवल सुकुमारी, पिय स्याम सरीर ॥ भीजो सुरंग पिय बागो, प्यारी तन चीर। हँसिके हरै हियरे की, मोहनि सब पीर ॥ १७१ ॥

काफी।

अनोखी लाल लली की, छबि हिय आज बसी ॥ अबिर भरी अलक दोउन की, मों तन आय डँसी। अरु नारी अखियाँ मदमाती, तकि उर बीच धँसी ॥ झीनी कंचुकि रँग सो भीनी, अंगन अतिहि कसी। अरुझन में बेनी

सिय जू की, पिय की अलक फँसी ॥ दै गल बाँहि परस्पर बिलसत, मुख पर मंद हँसी। मोहनिदास मेघपै मानहुं, दामिन आय लसी १७२॥

पीलू।

नोखे फाग खेलैया, देखन चतुरी बीर॥ हैं सरबोर रँग में दोऊ, आवत सरजू तीर। झीने बसन सटे अंगन में, लागी बदन अबीर॥ धरत कहूं पग परत कहूं कौ, स्रम ते सिथिल सरीर। अलसोंहीं पलक झूमत हैं, बिथिलित तन के चीर॥ मन उरझावत हँसि बतरावत, सँग सखियन की भीर। मोहनिदास नेकु निरखन में, हरत हिये की पीर॥ १७३॥

काफी।

अँखियन भरत अबीर री, वह पीर न जानत॥ मुरकावत धरि नरम कलैया, ऐंचत

धरि धरि चीर, री वह० ॥ झकझोरत मोहि पकरि पकरि अँग, मारत तकि दृग तीर, री वह०। मोहनि छिन छिन अँक भरत है, कसि कसि के बेपीर, री वह० ॥ १७४ ॥

कैसे तोहि लखौंगी, आंखि गुलाल न डार। कालि की अबिर अजौं लौं करकत, हारी करि उपचार। मलत मलत दोऊ दृग मेरे, ह्वै गये अति रतनार ॥ बिन देखे धीरज किमि धरिहैं, हियरो हाय हमार। मोहनि अली यही अरजी सुनु, अवध-छयल-दिलदार ॥ १७५ ॥

जंगला।

छैल तेरि बिनती करूँ मैं, अब जनि मोहि तरसाव। गरजी की अरजी सुनि प्यारे, नेक दरद हिय लाव ॥ चैन परे नहि पल छिन मोकों, करिये कौन उपाव। मोहनिदास अवध पिय मोकों वेगिहि दरस दिखाव ॥ १७६ ॥

काफी।

छैल बरजोरी लगैहौं, तेरे गाल गुलाल। निन नित भाजत हौ हँसि हँसि के, सीखे हौ यह चाल॥ कसर मिटैहौं सब दिनन की, तुमहिं बनैहौं बाल। मोहनिदास नचैहौं पकरि के, सुनुहु अवध के लाल॥ १७७॥

ठुमरी।

करकै हगन मेरे अँखियाँ तिहारी रे। तापै तुम डारत गुलाल मूठो मूठी भरि, करौ काहे रार ऐसी अवध-बिहारी रे॥ छल करि मारत करेजे तकि तीखे नैन, बने तुम प्यारे अहौ अजब सिकारी रे। एही मिस मेरो पत चाहत हौ लैबो तुम, मोहनि मैं जानी अब चतुराई सारी रे॥ १७८॥

बिलावल।

अबिर सुनैनन मति डारो। कैसे लखोंगी

बिधु सम आनन, श्री अवधेस दुलारो ॥ हाहा खाय करौं मैं बिनती, नेकु दया चित धारो । मोहनि मो मन मोहि लिया है, तुव नैना रिझवारो ॥ १७९ ॥

रेखता ।

होरी के रँग में रँगा पिया झूमता अली । देखन को चलिये आज री सोभा बनी भली ॥ जल हेत सरजु तीर भोर जात ही चली । बाँकी छबी छयल की मेरे हीय को छली ॥ कर में लिये पिचुकारि खड़ा कुंज की गली । घूंघट उघारि मारता लखि के नई लली ॥ मो दिस निहारि मोहनीफेंकी कमल कली । मनसिज के ताप तें सखी तेहि छिन जली जली ॥ १८० ॥

सहाना ।

ऐसो जुलुमी छैलवा अवध को यार, देख

ठाढ़ो हँसत रँग डार डार॥ तकि दोउ नैन गुलाल न डारत, बरजो न मानत बार बार॥ झकझोरत मोरा पकरि पकरि अँग, बसन भयो सब तार तार॥ मोहनिदास फाग लखि पिय को, अब तो गई मैं हार हार॥ १८१॥

काफी।

देखु सखी नयो होरी-खेलैया, पिचुकन कं सँग सान चलैया॥ घूँघट बदन उघारि अचानक, चूमि कपोल गुलाल लगैया॥ मारत तकि पिचुकारि हिये बिच, झोरिन भरि भरि अबिर उड़ैया॥ लपटि अंक तिय भेंटि भुजन सों, अधरामृत हँसि पान-करैया॥ अवध-किसोर छैल अलबेली मोहनि निरखत बलि बलि जैया॥ १८२॥

अवध-छैला होरी ऐसो खेलैया, रँग सों आज बचिहै को दैया॥ लै पिचुकारी खड़ो मग

महियाँ, पनियाँ भरन मोरी जावै बलैया ॥ सखन संग उतपात करतु है, हाय सखी गारी को गवैया ॥ मोहनिदास कहूं मैं कासों, नहिं कोउ दीखत दरद सुनैया ॥ १८३ ॥

आसावरी।

अजब गुलाल लसै दोउ गालन, मोहि लेत हँसि के मन लालन ॥ नाक बुलाकन मों मन लटकै, तिलक दिये केसर को भालन ॥ घायल कीन्हो अवध सँवलिया, हाय फँसाय अलक के जालन ॥ मोहनिदास धरै किमि धीरज, देखि अनोखी नई नइ चालन ॥ १८४ ॥

काफी।

सजनी आजु मिले मोहि मग में, राजकुमार ॥ मैं अपने मग चली जात ही, दीन्हो रँग तकि डार ! तापर लागे करन ठठोली, हँसि घूंघट

पट टार। मैं सकुचाइ गई सुनु आली, देखि मदन उनहार। मोहनिदास लोग सब देखत, ठाढ़े डगर मझार॥ १८५॥

खेमटा, तिहाई।

छैला अवध होरी खेलै, बरजोरी मोतें आज॥ भरिके कनक-पिचकारी, हिय तकि डारी, भीजि गई सारी, बिगरे सब साज॥ हँसि के नयन उर मारी, कहर मचे भारी, दरद भयो जारी, जैये कित भाज॥ कह मोहनी सु हमारी, सु अवध-बिहारी, करी अस ख्वारी, रहिहै किमि लाज॥ १८६॥

यथारुची।

आज अचानक अवध-छबीले, या बगियाँ बिच आया रे॥ पीत पोसाक मुकुट सिर ऊपर, कलँगीहू झमकाया रे॥ मैं ठाढ़ी फूलन बीनत

ही, नैनन बान चलाया रे। मोहनि मोहि लगाय कंठ सों फगुआ खूब मचाया रे ॥ १८७ ॥

होरी, डफ की।

छलिया ने छल मोते आज कियो ॥ अबिर गुलाल मलन मिस मेरो, बिहँसि कपोलन चूमि लियो ॥ मैं भोरी ठाढ़ी ही जकी सी नैन-बान हिय बेधि दियो ॥ मोहनिदास अवध-प्रीतम बिनु, अब तो कसकत हाय हियो ॥ १८८ ॥

काफी।

घायल करत निसनियाँ, हाय रघुबर चितवनियाँ ॥ छिन में मोहि लेत सब को मन, ऐसो रूप लोभनियाँ। जालिम अवध-लला री सजनी, खैंची भौंह कमनियाँ। मारि मोहिं दृग की अनियाँ ॥ अलक छूटि छबि देत बदन पै, लोटत मनहु नगिनियाँ। मुख की सोभा निरखि

सखी री, लज्जित होत दमिनिनियाँ। गजब मधुरी मुसुकनियाँ ॥ देखि रूप छकि जात मदन हैं, बाजत पग पैजनियाँ। मोहनिदास हरी हिय की गति, आय सुनाय बचनियाँ। कसक कसकत तन मनियाँ ॥ १८९ ॥

ठुमरी।

करिके सिंगार होरि खेलन कों पिय सों आई नव भामिनियाँ ॥ तिरछी चितवन सँग नैन-बैन मारत तकि तकि गज-गामिनियाँ ॥ झपटैं रपटैं मुख चूमि भजैं छिन चमकैं जिमि दामिनियाँ ॥ पढ़ि चेटक मंत्र चलावत हँसि मिथिला की नटखट कामिनियाँ ॥ चित चोरि लियो गल बाँह दियो मोहनि के स्वामी स्वामिनियाँ ॥ १९० ॥

ठुमरी खम्माच ।

रँग खेलि रही पिय सो हँसिके, मिथिला की बाँकी कामिनियाँ ॥ रँग डारति हँसि दृग मारति हँसि, भुज धारति हँसि गज गामिनियाँ ॥ दृग जोरति हँसि मुख मोरति हँसि, झक झोरति हँसि नव भामिनियाँ ॥ रँग खेलति हँसि भुज मेलति हँसि, मोहनि के स्वामी स्वामिनियाँ ॥ १९१ ॥

होरी डफ की ।

मलि दीन्ह गुलाल सुप्यारे को ॥ मिथिला की बाँकी नव नागरि, रूप गुनन उजियारे को ॥ झपटि चूमि लीन्हों मयंक-मुख, अवध छयल दिलदारे को ॥ मोहनि देह-सुरति तजि निरखत, पिय नैना रिझवारे को ॥ १९२ ॥

पिया तोरी नजरिया कतल करी ॥ सुनु दिलदार यार साँवलिया, गजब अलक मुख पै बिखरी ॥ लखि मुसुकान जनकपुर-बासिन तनिक नहीं जिय धीर धरी ॥ मोहनिदास बावरी कीन्हीं, आइ छैल मिथिला सिगरी ॥ १९३ ॥

विहाग।

बिहँसि मोहिं मारी नैन-कटार। पिचकारिन सँग सैन चलावत, प्यारे राजकुमार ॥ तकि कपोल कुंकुम हँसि मारत, घूंघट बदन उघार। मोहनिदास बिकी बिन दामन, लखि नैन रिझवार ॥ १९४ ॥

सहाना।

काहे हमरी सुरतिया भुलाई लला। कोमल चित धरि निठुराई लला ॥ जब तें गये मिथिला

तें प्यारे, पतियउ नाहिं पठाई लला ॥ बिरह ज्वाल जारत है अँग अँग, दोउ अँखियाँ झरि लाई लला ॥ मोहनिदास जुलुफवारो पिय, बेगि मिलो हरखाई लला ॥ ११५ ॥

काफी।

होरी माचि रही है, श्री सरजू के तीर॥ कमल करन पिचकारि चलावत, तापर उड़त अबीर। छल करि छैल धस्यो इक आली, ले गई कुंज कुटीर॥ निज भूषन पिय अँग अँग सजि के पहिरायो पुनि चीर। आपु पहिरि भूषन छलिया को, बागो धारि सरीर॥ लपटि अंक हँसि लाई पिय को, जहँ अलियन की भीर। मोहनिदास नचाय लला को, बोली को अब मीर॥११६॥

चैती घाटो।

प्रगट भये सुखकंद हो रामा, दसरथ के

गृह ॥ प्रमुदित मन है गावत सखियाँ, छायो उमगि अनंद हो रामा, दसरथ के गृह ॥ नौमी तिथि मधु मास सखी री, डोल पौन अमंद हो रामा, दसरथ के गृह ॥ मोहनिदास ध्यान जो लावत, फिरि न फँसै भव-फंद हो रामा, दसरथ के गृह ॥ ११७ ॥

खेलत चारो भैया हो रामा, कंचन आँगन ॥ राम लछमन भरत सत्रुहन, जननी लेत बलैया हो रामा, कंचन आँगन ॥ दौरि चलत गिरि परत धरनि पर, धाइ उठावत मैया हो रामा, कंचन आँगन ॥ मोहनिदास सबै बनि जैहैं, ध्यान धरे रघुरैया हो रामा, कंचन आँगन ॥ ११८ ॥

निरखत सीय कँगनवाँ हो रामा, छबि रघुबर की ॥ टारत नाहीं टेक रही कर, छाकी प्रेम मगनवाँ हो रामा, छबि रघुबर की ॥ सब

सखियाँ मिलि मंगल गावत, बैठी जनक अँगनवाँ हो रामा, छबि रघुबर की। मोहनिदास छुटे नहिं सजनी, जा हिय लाग लगनवाँ हो रामा, छबि रघुबर की ॥ १९९ ॥

सिय-बर के चोखे नैना सखी री, चुभि चुभि जाला ॥ जैसो सान सँवलिया कोरी, ऐसो जग बिच है ना सखी री, चुभि चुभि जाला ॥ चितवत ही घायल मोहि कीन्ही, हाय ललन की सैना सखी री, चुभि चुभि जाला ॥ मोहनिदास सिथिल सिगरो अँग, मुख नहिं आवत बैना सखी री, चुभि चुभि जाला ॥ २०० ॥

बिहरत सरजू किनरवाँ हो रामा, मोरा पियरवा ॥ बेला फूले निवारी फूली, फूले गुलाब अनरवाँ हो रामा ॥ कूकत कलित कठोर कोइलिया, बौरे आम चहुँ ओरवाँ हो रामा ॥ मोहनि

जाइ लपटि पिय-अंगनि, ह्वै गई भट गर-हरवाँ हो रामा ॥ २०१ ॥

बिधु सम आनन पहियाँ हो रामा, लट लटकत है ॥ मैं सुरभावन गई सुनु सजनी, सीतल कुंजन छहियाँ हो रामा ॥ सुरभावन में मों मन अरुझ्यो, कारे जुलफन महियाँ हो रामा ॥ मोहनि यह लखि अवध-सँवलिया, हँसि दीन्ही गलबहियाँ हो रामा ॥ २०२ ॥

रघुबर-छबि निरखन को हो रामा, अँखियाँ प्यासी ॥ छिन छिन मोहिं जुग सम बीतत है, धीरज होत न मन को हो रामा ॥ जब तें मोहि लियो रघुरैया, चैन परत नहिं तन को हो रामा ॥ मोहनिदास बताओ सजनी, जाऊँ कहा पी मिलन को हो रामा, अँखियाँ प्यासी ॥ २०३ ॥

मन मोरा बरजोरी लै गयो रामा, एहि कुञ्जबन में ॥ मन मोरा लीन्हो दैया, बावरी कीन्हों दैया, तिरछे तकि दुख दै गयो रामा ॥ छैल छबीलो गरबीलो दसरथ जू को, हँसि हँसि चेटक कै गयो रामा ॥ मोहनि रस बस करि साँवलिया, प्रेम बीज उर ब गयो रामा॥२०४॥

एही ठैयाँ मनवाँ हेरैलो हो रामा, एहि ठैयाँ जात रही मैं सरजू किनरवाँ, लखि मों तन मुसुकैलो हो रामा, एही ठैयाँ ॥ औचक आइ कढ़ी एहि मग तें, हाय हिये बिधि गैलो हो रामा, एही ठैयाँ ॥ मोहनि पिय नैना मों नैनन, बरबस आनि समैलो हो रामा, एही ठैयाँ२०५॥

रहि रहि जिय घबरावै हो रामा, तुम बिन छैला ॥ घर बन उपबन अरु फुलवरिया, मोहि न नेक सोहावै हो रामा, तुम बिन छैला ॥ मैं तलफूँ निस दिनवाँ तुमकों, नेक दया नहिं

आवै हो रामा, तुम बिन छैला॥ मोहनिदास अवध-पिय मोकों, काहे न दरस दिखावै हो रामा, तुम बिन छैला॥ २०६॥

नेक दरद हिय लावो हो प्यारे, दरस दिखाओ॥ जहँ जाऊँ तहँ सून लगत है, ऐसो क्यों तरसाओ॥ कोमल हिय तुमरो है छैला, मोकों नाहिं भुलाओ॥ मोहनिदास अवध के प्रीतम मरते मोहिं जिलाओ॥ २०७॥

पिय मोरा अवध सिधाये हो सजनी, मधु के महिनवाँ॥ जब तें गये मिथिलापुर तजके, अँग अँगबिरह सताये हो सजनी, मधु के महिनवाँ॥ निदियउ हाय गई प्रीतम सँग, रहत नयन जल छाये हो सजनी, मधु के महिनवाँ॥ मोहनिदास प्रीत करि पहिले, अब क्यों जियरा जराये हो सजनी, मधु के महिनवाँ॥ २०८॥

बगियाँ तोरत फूल कलियाँ हो रामा, पिया- सुधि आई ॥ बिरह-दवागि लगत ही मैं सखि, जरन लगी बिन छलिया हो रामा, ॥ झरन लगे आसुआँ नैननतें कासों कहो यह हलिया हो रामा ॥ मोहनि छतियाँ करूँ किमि सीतल, बिन पिय अवध सँवलिया हो रामा ॥ २०९ ॥

जिय नहिं परत चयनवाँ हो रामा, अवध लला बिन ॥ सिथिल भयो सिगरो अँग मेरो, निस दिन बहत नयनवाँ हो रामा, अवध लला बिन ॥ जब सुधि आवै हाय छैल की, मुख नहिं कढ़त बयनवाँ हो रामा, अवध लला बिन ॥ मोहनिदास लाल बिन सजनी, सूनी लगत अयनवाँ हो रामा, अवध लला बिन ॥ २१० ॥

धड़ धड़ धड़कत छतियाँ हो रामा, पिया मिलिबे को ॥ कंकन सरकि भुजन पर आए,

तउ नहिं भेजत पतियाँ हो रामा ॥ सुधि न रहति जब याद परति सखि, पिय की मधुरी बतियाँ हो रामा ॥ मोहनि अवध-छैल मिलिबे बिन, ऐसी भई मेरी गतियाँ हो रामा ॥ २११ ॥

मोर पिय अवध-बिहारी हो रामा, सुधि बिसराई ॥ बरसत रैन दिना प्रीतम बिनु, अखियाँ भई रतनारी हो रामा ॥ कहर करत जब याद परत सखि, जुलफन की घुँघरारी हो रामा ॥ मोहनि छिनहुँ लगत नहिं मनवाँ, बिरह करी अस ख्वारी हो रामा ॥ २१२ ॥

पिय-सुधि मोहि दिलावै पपिहरा, पिय पिय कहिकै ॥ मधु के महिनवाँ सकल बन फूले, मोहिं नहिं नेक सोहावै ॥ जब तें गए मिथिला तजि प्रीतम, तब तें जिय अकुलावै ॥ मोहनि बिरह-दवागि लगी तन, पिय बिन कौन बुझावै ॥ २१३ ॥

कलियाँ को सब रस लै गयो भौंरा, चूसि चूसि के ॥ निरस भये पूछत नहिं नेकहु, ऐसो लोलुप है गयो भौंरा ॥ चाखत रस कलियन को सजनी, इहि बिधी रतियाँ बितै गयो भौंरा ॥ मोहनि बिकसत कलिय तुरत ही, कमलहि छाड़ि चलै गयो भौंरा ॥ २१४ ॥

चाल, दूसरी ।

बिहरत प्यारे रे, सरजू किनरवाँ हो रामा ॥ कुंजन छहियन दै गलबाही, सिय सँग अवध-पियरवाँ हो रामा ॥ अँग अँग सुन्दर भुखन राजै, उर फूलन के हरवाँ हो रामा ॥ मोहनि अस जिय होत सखी री, दौरि मिलूँ पिय गरवाँ हो रामा ॥ २१५ ॥

कुंजन बोलै है कोइलिया रे कारी हो रामा ॥ बिरहिन के हिय हूक लगत है, संजोगिन

को प्यारी हो रामा ॥ मधु रितु बिहरत सीतल छहियाँ, पिय सँग जनक-कुमारी हो रामा ॥ मोहनि को मन-मृग पकस्यो है, प्रेम-फांस गर डारी हो रामा ॥ २१६ ॥

रघुबर प्यारा रे नैनों का तारा हो रामा ॥ धन जीवन हमरो है सजनी, दसरथ-राज-दुलारा हो रामा ॥ तब तें सखि मोहि कल न परत है, जबतें नेक निहारा हो रामा ॥ मोहनिदास त्यागि झूठो जग, प्रभु-चरनन चित धारा हो रामा ॥ २१७ ॥

नैना प्यारे को, लागै जनु भाला हो रामा ॥ बिन निरखे मोहि अवध-बिहारी, सब जग सून देखाला हो रामा ॥ कैसी करूँ कहँ जाउँ सखी री, अब नहिं नेक सोहाला हो रामा ॥ मोहनिदास सुनो मेरी आली, छैल अवध अब जाला हो रामा ॥ २१८ ॥

छैला मारी रे, तिरछी सयनवाँ हो रामा ॥ छिन अँगना छिन गलियन डोलूँ, पड़ेला नाहीं रे कतहूं चयनवाँ हो रामा ॥ ऐसी दसा भइ मेरी सखी री, सूखे कबहुं ना हमरो नयनवाँ हो रामा॥ मोहनिदास अवध-प्रीतम बिनु, मुख तें तनिको ना निकसे बयनवाँ हो रामा॥२१९॥

कजरी ।

लखो री श्यामल गोर-किसोर, यही अवधेस दुलारे हैं ॥ कानन कनक-फूल छबि राजै, दृग रतनारे हैं ॥ अलि-पतियाँ इव केस कटीलों, लटकत कारे हैं ॥ जात चले मन लेई सखी री, पथिक पियारे हैं॥ मोहनिदास अली प्रीतम दोऊ, दृग के तारे हैं ॥ २२० ॥

लखो री श्याम सरूप सलोने, खेलैं मैया की कनियाँ ॥ बार बार मुख चूमि लेत हैं,

दसरथ की रनियाँ ॥ चुभि चुभि जात हिये में सजनी, बाँकी चितवनियाँ ॥ मोहनिदास लेत मन बरबस, सुन्दर मुसकनियाँ ॥ २२१ ॥

प्यारे मोहि लियो मन मेरो, जादू हँसन तिहारे ना ॥ घायल करि दीन्ही मोहि तेरे, दृग रतनारे ना ॥ कहर करै हिय मेरे सुनिये, अवध-दुलारे ना ॥ मोहनिदास छोरि सब लगिहौं, पिय अँकवारेना ॥२२२ ॥

ललन मोहि मारि नैन की चोट, हाय करि दीन्हा दीवाना ॥ मुर मुसकाई अवध के छैला, चित लै तरसाना ॥ हो ऐसे तुम निठुर सांवरे, पहिले नहिं जाना ॥ मोहनिदास तुमै बिन अब तो, रहा जहर खाना ॥ २२३ ॥

जहर से भरे लाल तेरे नैन, डहर में कहर मचाते हैं ॥ चितवत हिये चुभे बरछी से,जिय घबराते हैं ॥ कान तलक दोऊ तने हुवे ये,मद

से माते हैं॥ मोहनिदास भौंह-छबि निरखे, मदन लजाते हैं॥ २२४॥

अरज बस यही अवध के छैल, होहु जनि नैनन तें न्यारे॥ भौं-कमान दृग-बान कान तक, तान हाय मारे॥ लगे नैन की चोट भयो मन, लोट पोट प्यारे॥ मोहनिदास बिहाल बाल करि जात जिया जारे॥ २२५॥

मेरो नेह लगो रघुबर तें, जिय नहीं मानै री गोइयाँ॥ मैं बिहाल हौं लाल दरद नहिं, जानै री गोइयाँ॥ फँसि के प्रीत त्यागि दीनो, कुलकानै री गोइयाँ॥ मोहनिदास बिकल लखि के मुसकानै री गोइयाँ॥ २२६॥

प्यारे नैन-मैन-सर मारि, हमें तुम क्यों तरसाते हौ॥ साँवलि सूरति अवध लला तुम नहिं दरसाते हौ॥ मीठी बात कहिके झूठी,

सौंहें खाते हौ ॥ मोहनिदास हिये की क्यों नहिं तपन बुझाते हौ ॥ २२७ ॥

प्यारे मारि नैन-सर मोहि, कहो अब किधर को जाते हौ ॥ घुँघुरारी कारी जुल्फों में हाय फँसाते हौ ॥ हँसि हँसि बोलि बोलि के प्यारे, मनहिं चुराते हौ ॥ मोहनिदास निठुर है मोंकों, क्यों तरसाते हौ ॥ २२८ ॥

सावन सरस सोहावन प्यारी, चित्त लोभावन पहुंचो आय ॥ चलहु झुलावन झुकि उझकावन, मधुरी तान सुनाय ॥ जनक-लड़ैती सुनि पिय-बतियाँ, चली मुदित सुख पाय ॥ मोहनि दामन पकरि पिया को, झूलन लागी गाय ॥ २२९ ॥

साजन धीरे धीरे झूलो, प्यारी डरपत है भारी ॥ ऐसो झोंका देहु लाल नहिं, सिय है

सुकुमारी ॥ थहरैं अंग लहरि लट मुखपै, फहरैं पट सारी ॥ मोहनिदास बिहँसि रघुनंदन गल-बहियाँ डारी ॥ २३० ॥

सरजू-तीर हिंडोरा झूलैं, सिय रघुबीर कदम-डारी ॥ लचकि मचकि झुकि झूमि पेंग को, मारैं सुकुमारी ॥ कोइल कूकि रहीं कुञ्जन में, मोरन धुनि न्यारी ॥ मोहनिदास बीन लै गावै, छबि लखि बलिहारी ॥ २३१ ॥

चाल दूसरी।

प्यारी झुलहु हिंडोरा घिरि आए बदरा। घिरि आए बदरा देखो छाये बदरा ॥ पहिरो सुरँग चुनरि ओढ़ो धानी चदरा। बोलैं दादुर पपीहा करैं मन कदरा ॥ सखि मान किये कौन हेतु बैठी तिदरा। ठाढ़ो बिनवै मोहनि देखो बरसै अदरा ॥ २३२ ॥

चाल तीसरी ।

पड़ल हिंडोरा देखो कदम की डारी रामा, हरि हरि झूलि रहे अवध-बिहारी रे हरि ॥ रहि रहि झोंका मारै जनक दुलारी रामा, हरि हरि गावैं सखीजन सुकुमारी रे हरी ॥ अलकैं बदन पर झूमैं घुँघुरारी रामा, हरि हरि उदै मानो चन्दा घन टारी रे हरी ॥ मोहनी कहत यही अरजी हमारी रामा, हरि हरि हिये बसो दोऊ पिय प्यारी रे हरी ॥ २३३ ॥

हरि हरि औचक छैला नैन-बान उर मारा रे हरी ॥ मंद मंद मुसकाके छलिया जादू मोपै डारा रामा, हरि हरि ऐसो जालिम हाय अवध को प्यारा रे हरी ॥ भई बेहाल बिसरि गई सुधि बुधि जबही नेक निहारा रामा, हरि हरि तलफत छोड़ि दृगन तें होइ

गयो न्यारा रे हरी ॥ मोहनिदास बताओ कोऊ मनिहौं यह उपकारा रामा, हरि हरि दरद मिटै नाइ बिन पिय राज-दुलारा रे हरी ॥ २३४ ॥

हरि हरि झांकी निरखौ बाँकी अवध-लला की रे हरी ॥ थाकी ब्रह्म-सभा की मति गति संकुची सब बसुधा को रामा, हरि हरि चकित चितव सब ओर कोर नैना की रे हरी ॥ एक बार हीं ताकी मुक्ती होइ जात जिन ताकी रामा, हरि हरि ऐसी बाँकी आंख मैनसम काकी रे हरी ॥ पूरन कर मनसा की हारे खोजि खानि उपमा की रामा, हरि हरि मोंहि लेत चित चितए हँसन लला की रे हरी ॥ मोहनिदास तिहारी निरखन चाहत परम कृपा की रामा, हरि हरि मूरति बिहरैं हिय में रूप-सुधा की रे हरी ॥ २३५ ॥

चाल चौथी।

जनक-दुलारी रे साँवलिया। सजि के सिंगार सखिन के सँगवाँ चली फुलवारी रे साँवलिया ॥ करि मंजन गिरजा-पूजन को, गई सुकुमारी रे साँवलिया ॥ अस्तुति करि अनु-रूप माँगि वर, भवन सिधारी रे सांवलिया ॥ तेहि औसर आये दोऊ भाई, चंद-दुति-हारी रे साँवलिया ॥ निरख स्वरूप सिय-रघुबर को, दियो मन हारी रे साँवलिया ॥ मोहनिदास प्रीति दोउन की, लखि बलिहारी रे साँवलिया ॥ २३६ ॥

छैल दोउ काके रे साँवलिया ॥ करत प्रकास फिरत फुलवरियां, नैनं अति बाँके रे साँवलिया ॥ करत कतल छिनकहि में सजनी, मंद मुसुकाके रे साँवलिया ॥ मोहनिदास हियो अस आवै, लगूँ गर जाके रे साँवलिया॥२३७॥

चाल पांचवीं धुन पूर्वी।

कंकन किंकिन नूपुर-धुनि सुनि, राम चितव सब ओर री मोरी गोइयां॥ मानहुं दुंदुभि मदन दियो है, फरकै सुभग अँग मोर री मोरी गोइयां॥ अस कहि फिरि चितये सिय मुख भयो, ससि अरु नैन चकोर री मोरी गोइयां॥ मोहनिदास परस्पर दोऊ, लखत दृगन की कोर री मोरी गोइयां॥ २३८॥

चाल छठवीं।

झूलो झूलो मेरे प्यारे, दसरथ राज-दुलारे ना॥ पेंग बढ़ाओ झुकि उझकाओ, अँखियन तारे ना॥ दृग उरझाओ, लट सुरझाओ अलकन वारे ना॥ मोहनि को हँसि कंठ लगाओ, प्रान अधारे ना॥२३९॥

झुला झूलो मेरे प्यारे, दशरथ-राज- दुलारे ना ॥ सुठि सुकुमारे प्रान- अधारे, अँखियन-तारे ना ॥ अलक सुधारे जुलुफन-वारे, रस मतवारे ना ॥ हिय-रिझवारे मोहनि प्यारे, दृग रतनारे ना ॥ २४० ॥

झूला झूलो मेरी प्यारी, वारी जनक-दुलारी ना ॥ सुठि सुकुमारी रूप-उँजारी, राज-कुमारी ना ॥ चाल गयंद मंद बोलनि पिय-मन-रिझवारी ना । मोहनि झमकि तिहारी झुलनि पै बलिहारी ना ॥ २४१ ॥

झूलन के पद।

ठुमरी।

झमकि चलो पिय सुरँग हिंडोरा झूलने रे ॥ बिबिध भाँति पंछी चहँकारे, पिय पिय पपीहा बोलत न्यारे, रंग बिरंग चहुं दिसि फूलन

फूलने रे ॥ घहरि घहरि गरजत घनकारे, रहि, रहि बरसत मंद फुहारे, बिहरैं दै गलबहियाँ सरजू कूलने रे ॥ सुनि सिय-बतियां प्रीतम-प्यारे, भूलन लागे गाइ मलारे, मोहनिदासनिरख तन मन-सुधि भूलने रे ॥ २४२ ॥

मेघ।

बदरवा चहुं दिसि उमड़ि सोहावै ॥ सुनु रघुनंदन प्रान-पियारे, तुव छबि मोहि ललचावै॥ डारन बोलत पीय पपीहा, कोइल कूक मचावै॥ मो हिय तकि चलाय निज बानन, मनसिज प्रान सतावै। करिये केलि चलि कुञ्जन छहियां, मोहनि यह जिय आवै ॥ २४३ ॥

भूपाली।

देखो प्यारे उमड़ि रहे घन कारे ॥ बिजुरी हू चमकत छिन छिन में, दीखत अजब बहारे। डारन बैठि पपीहा कोइल, बोलत न्यारे न्यारे॥

बरसत घोर सोर करि नव घन, भरि गये नदिया नारे । उमड़ि चले निज कूल छाड़ि कै, ऐसे है मतवारे ॥ ऐसो समय निरखि मेरो हिय, धीरज धरत न प्यारे । मोहनि के संग कुञ्जन छहियां विहरहु अवध-दुलारे ॥ २२४ ॥

गूजरी ।

उमड़ि घन गरजत प्यारे आय ॥ नान्ही बूँद परत रहि रहि के, चपला हूं दरसाय । चलहु कुंजबन झमकि हिंडोरा, झूलैं पेंग बढ़ाय ॥ सुनि सिय-बचन प्रेम-रस-साने, प्रीतम अति सुख पाय । आइ पुलिन सरजू तमालतर, झूलत हिय हुलसाय ॥ रहि रहि झोंका देत अली सब, बांकी सैन चलाय । मोहनिदास पिया-प्रीतम दोउ, गावत मृदु मुसकाय ॥ २४५ ॥

देसकार ।

मोरिलवा देखि नचत घन-घोर ॥ रहि रहि चमकत है दामिनियां, करत झिंगुरवा सोर ।

पिय पिय की धुनि रटन पपीहा, बहत सुपवन झकोर ॥ सावन सरस सुहावन में सखि, मन-भावन चित-चोर। श्री सरजू के पुलिन सिया-सँग, झूलत झमकि हिंडोर॥ रूप-गुमानन-वारी नारी, निज गुमान को छोर। हिय हुलसाय ठरी ह्वै पेंगवा, मारति झुकि झकझोर॥ अँचल फहरत उघरि उरोजन, ढाँपति हँसि मुख मोर। प्रेम-पियूष-नदी अलियन की, चहुँ दिसि लेत हिलोर॥ लपटत हँसि प्यारी प्रीतम-गर, मारति तकि दृगकोर॥ मोहनि दम्पति-केलि बिलोकत, रहि गयो मोर न तोर॥ २४६॥

मलार।

भले दोउ झूलत हैं मुसुकाय॥ जनक-लली अरु अवध छबीले, तिरछी सैन चलाय। दै गलबाँहि बिहँसि मुख चूमत, दोऊ दुहुन रिझाय॥ रंग-महल में मनिन हिंडोरा, रेसम डोर सोहाय। मोहनिदास झुलावैं झूला, निरखि रूप सुख पाय॥ २४७॥

टंक रागिनी।

झमकि झुकि झूलत राजकिसोर ॥ आम-की डार में पर्यो हिंडोरा, रेसम लागी डोर। सुन्दर बन-प्रमोद सरजू तट, बोलत दादुर मोर ॥ अवध-छबीली पेंग बढ़ावें, बसन उड़त झकझोर ॥ मोहनीदास चमर कर लीन्हे निरखत छबि त्रिनतोर ॥ २४८ ॥

बडहंस।

झुलनवां झूलत अवध-किसोर ॥ जनक-लली सँग दै गलबाहीं, लखत नैन की कोर। अवध- छबीली ठाढ़ी इत उत, पेंग देत झकझोर॥ दामिनि दमदम दमकि रही है, घिरी घटा घन घोर। मंद मंद फूही बरसत है नाचत माते मोर॥ हरी हरी छिति चहुँदिसि सोहत, झींगुर करि रहे सोर। मोहनि दास देखि बिधु-सम मुख, बनि गये नैन चकोर ॥ २४६ ॥

भूपाली।

झुलनवाँ झूलत सिय-रघुबीर ॥ सुन्दर कुंज-भवन में सजनी, निरमल सरजू-तीर। माती कोइल कूक मचावै, डारन बोलत कीर॥ झुकि झुकि झोंका देत सखी सब, पहिरे पचरँग चीर। दम दम दामिनि दमक रही है, रिम झिम बरसत नीर॥ झींगन झनकारत चहुँ दिस तें, सीतल बहत समीर। मोहनिदास मंद मुसकाके, हरत हिये की पीर॥ २५० ॥

ललित।

झूलत सेत हिंडोरा राम॥ सेतहि चमर लिये सखि ठाढ़ी, सेतहि रूप ललाम। सेत सिंगार पिया प्यारी को, लाजत कोटिक काम॥ सेत जड़ाव जड़े खम्भन में, सँगमरमर के धाम। मोहनिदास निरखि दोउ मूरति, बेगि बिके बिन दाम॥ २५१ ॥

बिलावल।

आज दोउ झूलत सुरँग हिंडोर॥ पचरँग साज सजे अंगन में, सिय-सँग अवध-किसोर। ठाढ़ी सखी हिंडोर झुलावै, उझकि उझकि झक झोर॥ दादुर की धुनि छाइ रही है, बोलत कोइल मोर। मोहनिदास बिक्यो बिन मोलहिं, निरखि दृगन की कोर॥ २५२॥

गौड़।

छैल दोउ हरित हिंडोरा राजैं॥ हरित डोर में हरित हिंडोरा, हरित सिंगारहि साजैं॥ हरित कीर डारन पै बोलैं, हरित भूमि छबि छाजैं॥ हरित सखी दोउ ओर झुलावैं, देखि चंद दुति लाजैं। मोहनिदास जुगुल मूरति को, ध्यान धरै अघ भाजैं॥ २५३॥

सारंग।

झूलत सिय-रघुबीर हिंडोर॥ स्याम रंग को पस्यो हिंडोरा, स्यामहि लागी डोर॥ स्याम

घटा चहुँ दिसि में सजनी, छाई है घन घोर ॥ स्यामा पंछो बैठी करि रही, स्याम लता पर सोर। मोहनिदास मगन ह्वै निरखत, छबि सुन्दर त्रिन तोर ॥ २५४ ॥

मेघ मल्लार।

झमकि झुमका झुकि झोंका खाय ॥ झोंटन के झोंकन में दोऊ, मुख पर झूमत आय। तिय के सुन्दर गोल कपोलन, रहि रहि चूमत धाय ॥ दरसत है हिय हार अनूठे, कुच परसत हुलसाय। प्रेम भरे उछरत छिन छिन में अनुपम रस को पाय ॥ झूलनि लखि मिथिलेस-लली की, प्रीतम मोद बढ़ाय। मोहनि निरखत एकटक तेहि दिसि तन मन सुरति गँवाय॥२५५॥

देस।

बरसत मेघ-फुहारे रे। दामिनि की अजब बहारे रे॥ काले पीले बदरा चहुँ दिसि, घेरि रहे

मतवारे रे। लोनी कुंजन छहियाँ झूलत, प्रमुदित अवध दुलारे रे ॥ जनक-लली झुकि पेंग चलावत, बिहँसत प्रीतम प्यारे रे। मोहनि दिसि तिरछे तकि रघुबर, नैन-मैन-सर मारे रे ॥२५६॥

बुन्दन रहि रहि बरसै रे। लखि केकी कामिनि हरसै रे ॥ झूमि रहे जल-लैके इत उत मानहुं घन छिति परसै रे। श्रीसरजू तट कुंजन छहियाँ, पिय प्यारी छबि सरसै रे। बादर गरज सुनत तिय लपटत, प्रीतम गर अति डरसै रे। मोहनि श्री प्रमोद बन महियाँ यह सोभा नित दरसै रे ॥ २५७ ॥

कुकुभा मल्लार।

झूलि रहे झुकि झूमि छली दोउ, श्रीसरजू के तीर ॥ छाय घटा चहुँ दिसि गरजत है, मंद मंद फूही बरसत है, बोलत कोइल कीर ॥ झोंकन दै अलि मंद हँसत है, मानहुँ कंजकली बिकसत है, उड़त सुरँग रँग चीर ॥ लखि छबि

मोहनिदास लोभाने, तन मन की सब सुरति भुलाने, बहत नैन तें नीर ॥ २५८ ॥

सजि सिंगार दोउ झूलि रहे हैं, सरजू पुलिन हिंडोरैं। तरुन सुललित लता अरुझानी, बिबिध बितान दिये जनु तानी, बहत पवन झकझोरैं ॥ रहि रहि ललना पेंग बढ़ावैं, हँसि हँसि मधुरी तान सुनावैं, बोलत मोर चकोरैं। लखि के दोउ छलिया मनहारी, मोहनिदास भये बलिहारी, लाजत काम करोरैं ॥ २५९ ॥

धुरिया मलार।

घन चहुंदिसि उमड़े कारे। दामिनि दमकत थिर न रहत छिन, दीखत अजब बहारे ॥ मोरिला पूंछ उठाय बिपिन में, नाचत हैं मतवारे। सरजू-पुलिन हिंडोरा झूलत, सिय सँग अवध-दुलारे ॥ नवल नागरी ठाढ़ी दुहुं दिसि, पेंग झप-

कि झुकि मारे। मोहनि यह बाँकी अनुपम छबि, निरखत पलक बिसारें ॥ २६० ॥

मेघ मल्लार।

सरजू-तट सुन्दर कुंजन में, सखि मेघन बूँदन बरसि रहे ॥ चहुंदिसि घन कारे घुमड़ाने, लखि मोरिला-गन हरसि रहे। तड़पि तड़पि गरजंत रहि रहि के, मानहुं घन छिति परसि रहे ॥ अस पावस समाज सुख-लखिकै, बिरहिन के हिय तरसि रहे। मोहनि कदम-तरे झूलन पर, पिय प्यारी छकि दरसि रहे ॥ २६१ ॥

बरसाती सावनी।

पड़ल हिंडोरा तीर सरजू के झमकि झूलत रघुबीर। दादुर मोरिला पपिहरा रे, डारन बोलत कीर ॥ अवध छबीली मारैं पेंगवा रे, पहिरे पँच-रँग चीर। मोहनि चमकै बिजुरिया, झिम झिम बरसत नीर ॥ २६२ ॥

झूलैं रे हिंडोरा सिया रघुबर, छाई है अजब बहार। कोइल कुहुँकन डरवारे, झींगन की झनकार॥ सब सखि ठाढ़ी मारैं पेंगवा रे, गावत राग मलार। मोहनि मोरिला नचत बन, लाजत मदन हजार॥ २६३ ॥

अवध-छबीले सिय-सँग प्रमुदित, झूलत सुरँग-हिंडोर। माती रे कोइलिया बोलै डारवारे, मोरन करि रहे सोर॥ अवध छबीली ठाढ़ी गावैं रे, लेत मनहिं बरजोर। बेधत मोहनि कर हियरा रे, नोकदार दृग कोर॥ २६४ ॥

सजि के सिंगार सिय सँगवाँ रे, झूलि रहे अवध-कुमार। नान्हीं नान्हीं बुँदियाँ बरिसै रे, करत झिंगुर झनकार॥ नाचै रे मोरिलवा चहुँ ओरवा रे, कोइल बोलत डार। लखि के अनूप छटा बाँकी रे होत मोहनि बलिहार॥ २६५ ॥

पड़ा रे हिंडोरा वाही रे अवधपुर, झूलत सिय रघुलाल। लचकि मचकि मारैं पैंगवा रे, अवधपुरी की बाल॥ बिहँसि दिये हैं गल बहियाँ रे, लटकत लट जिमि व्याल। मोहनिदास ठाढ़े निरखत, छिन छिन होत निहाल॥२६६॥

बिहाग।

नवल दोउ झूलत नवल हिंडोर॥ नवल नागरी झमकि पैंग को, मारत झुकि झकझोर नवल बसन नव तन में राजै, नवल सुरंग निचोर॥ नवल कुंज सुन्दर द्रुम छहियाँ, नचत नवल बन मोर। नवल तान नव नवला गावति नवल सुप्रेम झकोर॥ नवल दामिनी जनक लड़ैती, नव घन अवध किसोर। मोहनि प्रेम छके दोउ झूलत, नवल नेह रस घोर॥२६७॥

रेखता।

झूलैं हिंडोरा हँसि के री दसरथ कुमार हैं। गल

बाँहि दै सिया के सोभा अपार है॥ हिय फाँसिबे को फाँसी अलकैं लुरी सखी री। झुकि झूमती है जैसे चंदा पै मार है॥ भृकुटि कुटिल लला की सुन्दर कपोल है। घायल करे हैं लाखों को नैना कटार है॥ मृदु मंद मुसकुरा के हियरा चुरा लिया। छैला सुमोहनी का दिलदार यार है॥ २६८॥

पूर्बी।

बन प्रमोद में पत्यो हिंडोरा, झूलत सिय रघुबर री आली॥ निरखन चलहु साँवरी मूरति, पहिरे पँचरँग चीर री आली॥ पेंग बढ़ावत सुन्दर सखियाँ, बोलत कोइल कीर री आली॥ ढोल मृदंग चंग बर बीना, बजत सितार मजीर री आली॥ मोहनिदास मोहनि मूरति, हरत सकल भवभीर री आली॥ २६९॥

कालिंगड़ा ।

उमड़े घन चहुं दिसि स्याम स्याम । लागत छबि अति अभिराम राम ॥ झूलत पिय हँसि पेंग चलावत, झमकि उझकि सिय बाम बाम ॥ पिय प्यारी सोभा अनुपम लखि, लाजत है रति काम काम ॥ मोहनि दम्पति सुन्दर झूलन, निरखि बिके बिनु दाम दाम ॥ २७० ॥

खेमटा ।

चलो देखें सिया रघुबीर, झुलनवाँ झूलि रहे ॥ रहि रहि झोंका देत अली सब, उड़त सुरँग रँग चीर, झुलनवाँ झूलि रहे ॥ झोंकन में अलकैं झुकि झूमत, मनहुं भ्रमर की भीर, झुलनवाँ झूलि रहे ॥ मन-मृग मोहनि को बेधत है, नैन-तीर बेपीर, झुलनवाँ झूलि रहे॥२७१॥

आसावरी, धुन ठुमरी ।

प्यारे मोरी बगिया में झूलत हिंडोरा रे ॥

गावत मलार धुनि सुनि मन मोद होत, करत बिहँसि झकझोरारे ॥ मारत झमकि झुकि पेंगवा सलोनी सखी, नाचत कुहुकि कूकि मोरा रे ॥ माँगत मोहनि बरदान कर जोरे दोऊ, बसो हिय अवध किसोरा रे ॥ २७२ ॥

मल्लार।

बदरिया बूंदन बरसत बोर ॥ ठाढ़े भींजत छैल छबीली, श्रीसरजू के तीर ॥ दोऊ दुहुन परस्पर आली, जकड़े नेह जँजीर ॥ भीनो हरित बसन प्यारे को, प्यारी के तन-चीर। झीने बसन सटे अंगन में, तापर बहत समीर ॥ सोनलता सी प्यारी लपटी, स्याम-तमाल सरीर। मोहनि मो सँग आव लखन को, मिटि जैहै हिय पीर ॥ २७३ ॥

मल्लार धुरिया।

देखो कारो घन उमड़ि सोहावै ॥ अति

अँधियारी, तापै बिजुरी चमक न्यारी, बिरहिन हिय तरसावै ॥ तापै पिय पिय इत रटत पपीहा, उत मोरिला कुहुक सुनावै ॥ छाई हरियाई, महि पंथ कहुं सूझत न, सीतल पवन सरसावै ॥ कुंजन तें केलि गृह देखत घटा को, प्यारी अवध छैल सँग आवै ॥ भींजे तन बसन दोउकी छबि बाँकी लखि, मोहनि सु बलि बलि जावै २७४

कल्यान।

झमकि बन मोर नचत हरखाय ॥ घुमड़ि घमंड घटा नभ छाई, अनुपम छबि दरसाय। चमकि चमकि छिपि छिपि दामिनियाँ, छिन छिन देत डराय ॥ नवल नागरी निज प्रीतम सँग, बिहरत है सुख पाय। ताहि देखि अब प्यारी मेरो, हियरो अति हहराय ॥ चलहु हिंडोरे जनक लड़ैती झूलैं झुकि उझकाय। मोहनी को प्रीतम ठाढ़ो है, बिनवत हाहा खाय ॥ २७५ ॥

कुकुभी मल्लार ।

चलहु कुंज-बन सुरंग हिंडोरा, झूलैं झमकि झूलावैं ॥ चहुँदिसि उमड़ि चले नद नारे, बरसन छिन छिन मेघ फुहारे, मोर मुदित मन गावैं ॥ निज गरजहि घन गरज सुनावै, दामिनि दमकि दमकि छिपि जावै, मो हित अधिक डरावैं ॥ हँसि प्यारी गल बहियाँ डारहु, मान त्यागि टुक नेकु निहारहु, तुम बिनु कछु न सोहावैं ॥ मोहनि जनक लड़ैती हँसि हँसि, झपटि झपटि भुज भेंटहु कसि कसि, मिलि हिय तपन बुझावैं ॥२७६॥

लावनी ।

सखि आज झुलनवाँ लालहिं झमकि झुलैहों ।
हँसि हँसि के मधुरी मधुरी तान सुनैहों ॥
लखि के बाँकी मुसकान अधिक सुख पैहों ।
रहि रहि के झोंका देय मलारहि गैहों ॥

बिखरी अलकैं निज कर सों जाइ बनैहौं।
अपने बस में हँसि सिय पिय को करि लैहौं॥
लखि के छलिया छबि व्याकुल दृगन जुड़ैहौं।
कहै मोहनिदास ललकि पिय कंठ लगैहौं॥ २७७।

ठुमरी।

आजु तो अवध सैयाँ झमकि झुलाओंगी॥ मीठी मीठी तान गाइ, मन्द मन्द मुसकाई, झों-टन को मारि मन सुख न समाओंगी॥ लट सुरझैहौं उरझैहौं मन आपनोरी, कंठ सों लगाय हिय तपन बुझाओंगी॥ पान को खवैहौं, ताको उगलन पैहौं सखी, मोहनि बदन लखि दृगन जुड़ाओंगी॥ २७८॥

ग़ज़ल।

घटा छाई है किस सोखी से ऐ दिलदार सावन में। धड़कता है जिगर मेरा बिना दीदार सावन

में ॥ लबे सीरीं का दे बोसा करो तुम प्यार सावन में कलेजा टूक होता है जिला लो यार सावन में ॥ तड़फते मुर्ग़ बिचारे से करो क्यों रार सावन में ॥ बनो तुम मोहनी मेरे गले के हार सावन में ॥ २७९ ॥

मलार।

देखो आली पावस ऋतु घिरि आई ॥ हरित भूमि त्रिन संकुल ह्वै रही, मेघ बूंद झरि-लाई। दामिनि दमकि आह उपजावति, मोहि न नेकु सुहाई ॥ कोइल कुहुँकि २ जिय जारत, पपिहा सोर मचाई। मोहनि जब तें गये मिथि-ला तें, तब तें खबरि न पाई ॥ २८० ॥

टोडी।

चित चाहत जोगिन होइ जाऊँ ॥ भूखन बसन त्यागि सब आली, अंगन भसम रमाऊँ।

नैन अँजन धोइ, मुख तमोल धोइ, सिर पर जटा बढ़ाऊँ ॥ मिलो नहीं अवधेस-छली री, काको बिपति सुनाऊँ । मोहनिदास नाम प्यारे को, लै लै अलख जगाऊँ ॥ २८१ ॥

मल्लार ।

हमारे दृग बरसत जिमि घनघोर ॥ मन जवास के सब अभिलाखा पात-हाय बरजोर । गलि गये तुरत परत ही सजनी, बिरह बूंद झकझोर ॥ सोक बलाहक उमड़ि चहूं दिसि, आह गरज कर सोर । मोहनिदास भई पावस ऋतु, बिन पिय अवध किसोर ॥ २८२ ॥

बरसाती ।

देखो सखी सैयाँ मोको तजि गये, ऐसे सवनवाँ में हाय ॥ सूनी रे सेजरिया मैन मरो रे

रे, मो अँग अँग जराय ॥ तापर मेघवा गरजि के रे, रहि रहि देत डराय ॥ मोहनि छतियाँ करूँ सखी, सीतल केहि लपटाय ॥ २८३ ॥

सूनि रे सेजरिया, जिय डरपै रे, कौने देस छाये पिय मोर ॥ नागिन सी डसत अँधेरिया रे, बहत पवन झकझोर ॥ कौन के लागूं सखि छतियाँ रे, सैयाँ बिन मदन मरोर ॥ मोहनि तलफत जियरा रे बिरह उठत तन जोर ॥ २८४ ॥

(सैन के पद)

बिहाग ।

लाल अब चलहु करहु सुख सैन । चुनि चुनि कलियन सेज बिछायो, पौढ़हु आनँद-दैन ॥ सुनि हँसि प्रीतम प्यारी कर धीर, आए अनुपम ऐन । मोहनि जनक लली रघुनंदन, पौढ़े छकि मद मैन ॥ २८५ ॥

सूहो बिलावल।

चली सिय पौढ़न को पिय संग ॥ नवल नागरी नवलहिं नागर, छाके नवल उमंग। नवल हँसनि नवलहि मृदु बोलनि, नवल सु बसन सुरंग ॥ सुन्दर नवल बिभूखन राजत, नवल सु कोमल अंग। नवल केलि दम्पति मोहनि लखि, लाजत नवल अनंग ॥ २८६ ॥

बिहाग।

लाल तुम पौढहु सेज अनन्द। मैं दासी तुव चरन पलोटूं निरखि अमल मुखचन्द ॥ सुनि सिय बचन सेज पै पौढ़े, आलस-बस सुख-कन्द। मोहनिदास निरखि दोउ मूरति, हिय हुलसात अमन्द ॥ २८७ ॥

पलँग पर राजत दोउ रँगीले। दसरथ सुत अरु जनक किसोरी, सुन्दर परम छबीले ॥

झूमि परत झुकि झुकि पलँगा पै, दरसत नैन रसीले। मोहनिदास पाइ भल औसर, रूप सुधा रस पीले ॥ २८८ ॥

नवल दोउ सुन्दर सेज सोहात ॥ जनक लडैती अवध लड़ैतो बोलत अटपट बात। मनसिज के मद छकि पिय प्यारी, सोचत निज निज घात ॥ धरत भुजा कसि कसि झकझोरत, अलक बदन लहरात। बीरी बिहँसि खवावत आनन, धुनि खैंचत मुसकात ॥ लपटि लपटि झुकि झुकि तकि तकि दोउ, चूमत सुन्दर गात। मोहनि यह दम्पति सुकेलि छबि, निस दिन हिय दरसात ॥ २८९ ॥

सेज पर द्वै चँदा दरसात ॥ लपटाने पटताने पौढ़े, पान खवावत खात। अधरामृत हँसि पान करत दोउ, मंद मंद मुसकात ॥ बिहँसि कपोलन परसि परसि के, आनँद हिय

न समात। मोहनि जनक लली प्रीतम सँग, बिहरति सिगरी रात ॥ २९० ॥

सोहनी।

पलँग पर बिलसत दोउ हुलसाय। जनक लड़ैती अवध-लड़ैतो, तिरछी सैन चलाय॥ झकझोरन में अलक कपोलन पै, लटकत छहराय। झूकि झुकि पान पीक मुख गेरत, भुज भेंटत हरखाय॥ स्रम सीकर सुंदर तन राजत, अनुपम छबि दरसाय। मोहनिदास प्रेम में छाके, निरखत बिजन डोलाय॥ २९१ ॥

जंगला काफी।

परस्पर हँसि हँसि करत बिहार। अवध लला मिथिलेस-लड़ैती, मदन रती उनहार॥ तिय कुच कोर धँसत पिय हिय में, तिय हिय दृग रिझवार। मोहनि दोउ बिकि जात छिनहिं छिन, बदन निहारि निहार॥ २९२ ॥

धनाश्री।

बिहँसि दोउ नैनन सैन करैं। अवध लला मिथिलेस-लड़ैती, मनमथ-मान हरै॥ मुसक्यावैं वतराइ लोभावैं, कसि कसि अंक भरैं। मोहनि आलस बस सुख-सेजन, झुकि झुकि झूमि परैं॥ २९३॥

भूपाली।

अलक छुटि छहरत मुख पर आय। स्वेद, कंप, रोमाञ्च छिनहिं छिन, अँखियाँ झपि झपि जाय॥ आलिंगन, चुम्बन अरु नख-छत, छतियन पै दरसाय। मोहनि अवध पिया प्यारी सँग, बिहरत अति सुख पाय॥ २९४॥

ठुमरी।

दोउ लपटि झपटि सुख बिहरि रहे, सेजियन पै नेहियाँ में फँसिके। झुकि उझकि उझकि

भुज भेंटि भेंटि, मुख चूमत प्रेम भरे कसिकै ॥ दृग सैननि पैननि मारि हिये, अधरा रस पान करैं हँसिकै। छबि मोहनि जनक लली पिय की, सुख दीन्ह अपूरब हिय बसिकै ॥ २६५ ॥

झंझौटी।

रस केलि भवन में लपटि झपटि, बिहरत हैं सुन्दर दोउ रसिया ॥ मिथिलेस लली अवधेस छली, बाँकी छबि मोहनि मन बसिया। बिथुरी अलकैं झलकैं मुख पै ललकैं जियरा हियरा गँसिया ॥ स्रम स्वेद बिराजत गातन पै, बातन मधुरी सुनि चित फँसिया। नित चाहत मोहनि मैं होऊँ, सिय पिय के चरनन की दसिया ॥ २६६॥

खम्माच।

प्यारे को अधर मधु पियत सु प्यारी हँसि ॥ घूमत दृगन माते, झूमत अलक कारी, चूमत

बदन भुज, भेंटति हरखि कसि ॥ गातन पै स्रम स्वेद, सोहत है दोउन के, बिथिलित बसन, सिथिल तन माहीं लसि ॥ छैला अवधेस सेज, जनक लली के सँग, राजै छबि मोहनि के, हिय में रही है बसि ॥ २१७ ॥

ईमन ।

पिय हँसि तिय को घूंघट टारो ॥ उघरत ही अस छबि दरसी है, मोहि गयो लखि अवध दुलारो । सिय मुख मुकुर माँहि निज मुख को, देखि चकित भयो प्रीतम प्यारो ॥ रूप गुमान छांड़ि ताही छिन, निरखत नैन निमेख निवारो । मोहनि नव रस माँहि दोउन को, मिलिगो दृग सों दृग रिझवारो ॥ २१८ ॥

भैरव ।

आजु पिय प्यारी मनहिं लोभावै ॥ कबहूं रूप धारि प्यारी को, कबहूं पिय बनि आवै ।

कबहूं मान करै प्यारी सों, कबहूं आपु मनावै॥ करत कलोल बिहँसि मुख चूमत, इहि विधि रैन गँवावै। मोहनिदास निरखि दोउ मूरति, रोम रोम बलि जावै॥ १९९॥

(प्रभात—छबि)

भैरवी।

दम्पति भोर उठे अलसाते। जनक लली रघुबर पलँगा पै, दोऊ झुकि झुकि जाते॥ बिखरि रहीं अलकैं मुख ऊपर, झूमत दृग मदमाते। मोहनिदास धन्य जग सो नर, यह दरसन जो पाते॥ २००॥

(उपवन—बिहार)

ईमन।

प्रीतम चलहु कुञ्ज द्रुम छहियां। बिबिध रंग के सुमन खिले जहँ, सुन्दर बागन महियाँ।

सुनि सिय मधुर बचन रघुनन्दन, हँसि प्यारी कर गहियाँ। मोहनि जाय प्रमोद बिपिन में, बिहरत दै गल बहियाँ ॥ ३०१ ॥

पूर्वी।

बिहरत सिय रघुबर उपवन में, मुकुलित कुसुम खिलंत री ॥ कोइल मोर चकोरन की धुनि, सजनी अजब लसंत री ॥ नव किसलय फल सुमन सोहावन, देखत हृदय फसंत री ॥ मोहनिदास चहूं दिसि बन में, छाइ रह्यो है बसंत री ॥ ३०२ ॥

लावनी।

लखो सखि अवध छैल प्यारो।
सिया सँग बिहरत सुकुमारो ॥
दोऊ जोरी को लखि लीजै।
निरखि नैनन को सुख दीजै ॥

प्रेम की बारुनि चलि पीजै ।
सुफल अपनो री जनम कीजै ॥

दोहा ।

नवल नेह में दोउ फँसे,
रघुबर सिय महरानि ।
बिहँसति दै गलबाहियाँ,
छबि नहिं जात बखानि ॥
अलक मुख पै झूमत कारो ।
सिया सँग बिहरत सुकुमारो ॥
मंद मुसुकान हिये पागी ।
अनी नैनन की उर लागी ॥
जुलुफ में जिय फँसाइ जागी ।
मिलै अब नहिं मुराद माँगी ॥

दोहा ।

प्यारे जू सिय तन लखैं,
प्यारी पिय की ओर ।

पान खवावत मोहनी,

लाजत काम करोर ॥

नैन से होवै जनि न्यारो ।

सिया सँग बिहरत सुकुमारो ॥३०३॥

खेमटा ।

खड़े दोउ दै गलबाहीं अली ॥ स्याम बरन अवधेस लाड़िलो, गोरी जनक लली ॥ मानहु मेघ घटा में दामिनि, सोहत सुभग भली ॥ तन मन वारि दियो छबि ऊपर, लखि मोहनि अली ॥ ३०४ ॥

ठुमरी ।

गोरे से बदन पर स्याम बिंदुलिया ॥ मानहुं अलि छौना पंकज पै, बैठो है आय लगै छबि भलिया ॥ तापर झीन नील सारी तन, चमकत जनु घन माँझ बिजुलिया ॥

मोहनि पिय मन जाइ फँस्यो है, लखि सिय की मुसक्यान रँगिलिया ॥३०५॥

(रास के पद)

कालिंगड़ा।

छुम छननननन धुन छाय रही। प्यारी हँसि पियहिं लोभाय रही ॥ पिय मुख इन्दु चहूं दिसि सखियाँ, तारा गन दरसाय रही। अलिन संग मिथिलेस लडैती, मिलि मधुर सुर गाय रही ॥ सुन्दर बन प्रमोद सरजू तट, अजब छटा छहराय रही। रहसि रास दम्पति बिलोकि सुधि, मोहनि अलि बिसराय रही ॥३०६॥

(गुलाब-बँगला के पद)

झंझौटी।

आजु गुलाब महल बिच दम्पति, राजत सुन्दर भेस किए री ॥ सरजू तीर कुञ्ज सुख

पुंजन, बिहँसत दोउ गलबाँह दिए री ॥ फूलन के गहने अँग सोभित, मनमथ हू को मान लिये री ॥ मोहनि नृत्य दरत आनँद में, प्रेम वारुनी छाकि हिए री ॥ ३०७॥

(स्फुट पद)

राग अड़ाना।

मो दिसि अवध छैल हँसि हेरै। या अगना नीचे गलियन में, ठाढ़ो ह्वै नित टेरै॥ जब मैं चौंकि झरोखे झाँकूँ, तिरछे तकि दृग फेरै। मोहनि दूरहि तें ललचावै, आवै कबहुं न नेरै॥ ३०८॥

तिलंग।

तू नित सरजू मिस कहँ जावै। तेरो हाल मोहि सजनी री, चित में भ्रम उपजावै॥ सखि मोकों निज हिय की बातैं काहे नाहिं

बतावै। मोहनिदास प्रीति अलबेली, छिपत न लाख छिपावै ॥ ३०१ ॥

राग बरवा।

स्यामल ठग मोहि ठग्यो आइके। अतर भरी जुलुफन मुख छोड़े, मंद मंद मुसकाइ कै। मो तन चितै सैन करि बाँकी, लीन्हो चित्त चोराइकै। मोहनिदास भज्यो कहुं सजनी, छल करि मोहि भोराइकै॥ ३१० ॥

जैतश्री।

सखी री देखो ए बटोहि मन-हरिया। स्याम गोर सुभ अंग सलोने, संग नारि सुकुमरिया ॥ भौंह बंक बिच तिलकमाधुरी, दोउ नैन रतनरिया। सीस जटा मुनि-भेस बनाये, हाथ बाम धनु धरिया॥ चोरत चित्त मन्द मुसकाके, मारत सैन कटरिया। मोहनिदास विलोकि पथिक दोउ, कहत ग्राम-नरनरिया। ३११ ॥

मारू।

पथिक दोउ बाँके अनूप सुहात। संग नारि सुकुमारि सलोनी, अँग अँग छबि दरसात॥ सीस जटा बिच कुसुमकली री, राजत सुन्दर गात। कोमल अमल अरुन चरनन लखि, सकुचि जात जलजात॥ चोरत चित भृकुटी अति बाँकी, मन्द मन्द मुसकात। मोहनिदास ग्राम बनितन के, निरखि नैनजल जात॥३१२॥

ठुमरी।

न जानूं सखी छाये कहाँ सुखधाम। निसि बासर नहिं चैन परत है, तलफत बीतत जाम॥ ऐसे भये कठोर साँवरे, नहिं आवत मम धाम। मोहनिदास दरस अब दीजे, पूरन कीजे काम॥ ३१३॥

(विनय के पद)

भैरव।

कृपा की कटाच्छ राम मेरी ओर हेरो॥ पाप करत बीतत है साँझ औ सबेरो। पापिन सरदार हूं मैं और सबै चेरो॥ हिये माहिं काम क्रोध दीन आय डेरो। लोभ मोह मत्सरहूं कीन्ह हैं बसेरो॥ आय यही जाँचत हौं गहे द्वार तेरो। एक बार नाथ कहो मोहनी है मेरो॥ ३१४॥

श्रीराग।

जय जय जयति जय जय राम। जयति जय जगजननि सीता, जयति सुन्दर नाम॥ जयति पावन सरित सरजू जय अयोध्या धाम। दास मोहनि भनत जय जय, जयति आठौं जाम॥ ३१५॥

॥ इतिश्री॥

विशेष वक्तव्य ।

जिन रामरसानुरागियों को इस पवित्र 'प्रेमपीयूषधारा' के विशुद्ध प्रेमामृत का पान करना अभीष्ट हो, वे तदीय दासानुदास गदाधरप्रसाद (उपनाम मोहिनीदास) की कोठी, कचौरीगली बनारस से मँगा लेवें ।